RNI No. RAJHIN/2013/50503

देव चेतना

हिन्दी मासिक

वर्ष : 11 अंक : 8 जयपुर प्रकाशन तिथि : 5 अक्टूबर, 2023 मूल्य : 20/- पृष्ठ-36

गुर्जर प्रतिहार सम्राट
मिहिर भोज

गुर्जर सम्राट
पृथ्वीराज चौहान

गुर्जर

गुर्जर तेरा परिचय इतना कि तू समरांगण का वीर है!
महाराज मनु का तू वंशज, इतिहास की शमशीर है,
सिंहनी का जाया तू, दशरथ सा कर्मवीर है,
राम सरीखा मर्यादा पुरुष, लक्ष्मण सा प्रतिहारी है,
भरत सम सा त्यागी तू, कर्ण सरीखा दानी है,
गुर्जर तेरा परिचय इतना कि तू समरांगण का वीर है!

मिहिर भोज सा योद्धा तू , नागभट्ट सा महावीर है,
दद्दा गुर्जर समान अजेय तू, परमार भोज सा ज्ञानी है,
सवाई भोज सा भगत तू, रावत नेवा सा जुझार है,
पृथ्वीराज सा हिन्दवा सूरज, नलवा हरी सिंह की तलवार है,
गुर्जर तेरा परिचय इतना कि तू समरांगण का वीर है!

जीजा बाई का वीर शिवा तू, प्रताप राव सा वीर है,
वीर जोगराज की हुंकार तू, पन्नाधाय की संतान है,
कुषाण कनिष्क सा सम्राट तू, बाप्पा रावल सा बलशाली है,
अनंगपाल सा तंवर तू, भीम सा चालुक्य है,
गुर्जर तेरा परिचय इतना कि तू समरांगण का वीर है!

तोमर मानसिंह सा कला पारखी तू, देव हंस सा क्रांति नायक है,
पथिक विजय सिंह सा कर्मवीर तू, धनसिंह सा कोतवाल है,
सरदार पटेल सा लौह पुरुष तू, भारत की तकदीर है,
गुर्जर तेरा परिचय इतना कि तू समरांगण का वीर है!

रणभेरी के बजने पर तू , खडग चलाया करता है,
गुर्जरी माँ का वीर पुत्र तू, सिंह तरह मतवाला है,
बिन माथे तू बैरी मारे, धर्म का तू रखवाला है,
दूध लजाकर घर न लौटे, तू अपने कुल का उजाला है,
गुर्जर तेरा परिचय इतना कि तू समरांगण का वीर है!

गर्व से कहो- गुर्जर हूँ! गर्व करो- गुर्जर हूँ!

भारत रत्न लौहपुरुष
सरदार वल्लभ भाई पटेल

अमर क्रान्तिकारी
विजय सिंह पथिक

देव चेतना पत्रिका के प्रेरणा स्रोत एवं प्रधान संरक्षकगण

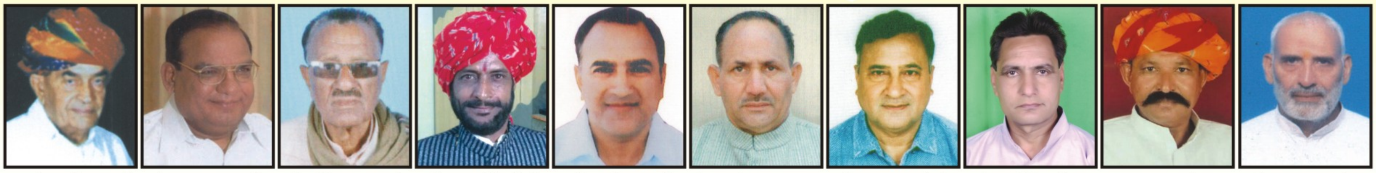

स्व.श्री रामगोपाल गार्ड – प्रेरणा स्रोत
श्री कालूलाल गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री भौंरेलाल बागड़ी – प्रधान संरक्षक
श्री सरदारसिंह चेची – प्रधान संरक्षक
श्री अशोक गार्ड – प्रधान संरक्षक
श्री पुरुषोत्तम फागणा – प्रधान संरक्षक
श्री रतनलाल चेची – प्रधान संरक्षक
श्री पृथ्वीसिंह चौहान – प्रधान संरक्षक
रामलाल गुंजल – प्रधान संरक्षक
श्री घनश्याम तंवर – प्रधान संरक्षक

श्री चन्द्रशेखर बसवा – प्रधान संरक्षक
श्री अमरसिंह धाभाई – प्रधान संरक्षक
श्री गोपाल धाभाई – प्रधान संरक्षक
श्री लक्ष्मणसिंह कसाना – जयपुर- प्रधान संरक्षक
श्री ब्रह्मसिंह गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री शान्तिलाल गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री बुद्धाराम चाड़ – प्रधान संरक्षक
श्री देवनारायण लटाला – प्रधान संरक्षक
श्री पी.सी. अवाना – प्रधान संरक्षक
महन्त श्री दयालनाथजी – प्रधान संरक्षक

श्री शैतान सिंह गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री राजेश लोमोड़ एडवोकेट – प्रधान संरक्षक
श्री विजय सिंह डोई – प्रधान संरक्षक
श्री गोपाल सिंह गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री विजयसिंह कसाना – प्रधान संरक्षक
श्री जगदीश रावत – प्रधान संरक्षक
श्री चन्द्रभान अवाना – प्रधान संरक्षक
श्री लखन पटेल – प्रधान संरक्षक
मन्नालाल प्रधान, कोटा – प्रधान संरक्षक
श्री बाबूलाल छेपट – प्रधान संरक्षक

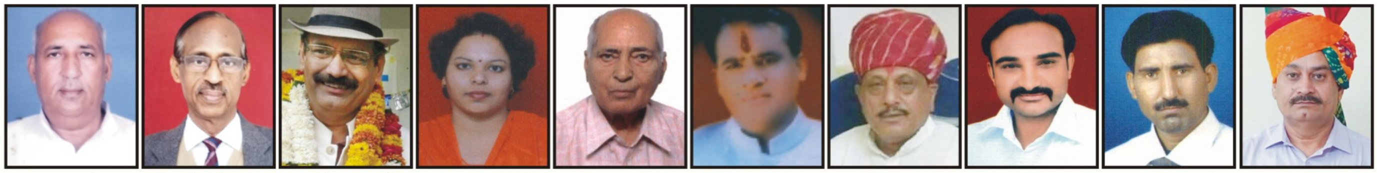

तिलकराज बैंसला – प्रधान संरक्षक
कर्नल चौ. देवेन्द्र सिंह – प्रधान संरक्षक
दामोदर गुर्जर – प्रधान संरक्षक
डॉ. रेखासिंह गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री अमरसिंह कसाना – प्रधान संरक्षक
श्री मनमोहन फागणा – प्रधान संरक्षक
श्री कन्हैयालाल छावड़ी – प्रधान संरक्षक
श्री नीरज पटेल – प्रधान संरक्षक
श्री गोविन्द गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री सांवरलाल गुर्जर – प्रधान संरक्षक

श्री चेतन गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री गौरीशंकर डोई – प्रधान संरक्षक
चौ. शिवपाल सिंह – प्रधान संरक्षक
विजयलाल सराधना – प्रधान संरक्षक
श्री राजेन्द्र दौराता – जयपुर- प्रधान संरक्षक
श्री अमरसिंह भगत – मिलकपुर-प्रधान संरक्षक
सत्यनारायण सेठ, दाबादेह, कोटा – प्रधान संरक्षक
श्री शंकरलाल कसाना – प्रधान संरक्षक
मेवाराम छावड़ी – प्रधान संरक्षक
फूलचन्द चेलरवाल, भैरुखेजड़ा, जयपुर – प्रधान संरक्षक
बजरंग लाल गुर्जर, जिलाध्यक्ष-झालावाड़ – प्रधान संरक्षक

श्री जगजीतसिंह-स्व.श्रीमती चांद सिराधना – प्रधान संरक्षक
श्री भंवरलाल गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री सूरतराम गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री रामजीलाल गुर्जर पटवारी – प्रधान संरक्षक
श्री फतेहसिंह चेची – प्रधान संरक्षक
श्री धनराज गुर्जर – चेयरमैन, प्रधान संरक्षक
हलवाई श्री घीसू गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री डी.एस. लोहमोड़ – प्रधान संरक्षक
एडवोकेट बंशीधर गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री नानजी भाई गुर्जर – प्रधान संरक्षक

श्री सुखराम गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री जगदीश गुर्जर – प्रधान संरक्षक
डॉ. अमित सिंह – प्रधान संरक्षक
श्रीमती सावित्री गुर्जर – प्रधान संरक्षक
इन्द्र चन्द गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री ओमप्रकाश गुर्जर – प्रधान संरक्षक
श्री उमाशंकर जैमिनी – प्रधान संरक्षक
श्री रघुनाथ गुर्जर (केसरी) – प्रधान संरक्षक
श्री रामस्वरूप सराधना – प्रधान संरक्षक
श्री शांतिलाल (जिंदल) – प्रधान संरक्षक

श्रीमती मंजू धाभाई – प्रधान संरक्षक

डॉ. बबीता सिंह – प्रधान संरक्षक

RNI No. RAJHIN/2013/50503

देव चेतना

हिन्दी मासिक

सामाजिक, राजनैतिक समाचार, आध्यात्मिक ज्ञान, धर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य-कला एवं संस्कृति की अमृतमयी पत्रिका

वर्ष : 11 अंक: 8 जयपुर प्रकाशन तिथि: 5 अक्टूबर, 2023 मासिक

:: अनुक्रम ::

1. सम्पादकीय... उपेक्षा के शिकार गुर्जरों ने चेताया	4
2. गांधी जयंती पर 'इतिहास बचाओ-स्वाभिमान बचाओ' संकल्प संगोष्ठी सम्पन्न	5-6
3. गुर्जर विकास संगठन द्वारा सामाजिक मुद्दों पर चर्चा	7
4. गुर्जर महाकुंभ ग्वालियर को लेकर समाज लामबद्ध	8-9
5. सूर्योदय स्वयं की खोज गुर्जरोदय	10-14
6. अपने पूर्वजों के पदचिह्नों पर सेवा में अग्रणी कसाना परिवार	15-17
7. गौसेवा को समर्पित व्यक्तित्व तिलक राज बैंसला	18-20
8. वरिष्ठ नागरिकों को मार डालो... जया बच्चन	21
9. देवनारायण धाम जोधपुरिया पदयात्रा में उमड़ा जनसैलाब	22-24
10. गुर्जर प्रतिभा परिचय : बीकानेर के देवेन्द्र गुर्जर	24
11. पुस्तक 'गांव और अम्मा' की सारगर्भित समीक्षा	26-28
12. प्रो. यादव राज्यस्तरीय पं. जोशी अवार्ड से सम्मानित	29
13. श्री देवनारायण पाट्-ज्योति शक्तिपीठ विज्ञान	30-31
14. सरदार पटेल जयन्ती : राष्ट्रीय एकता दिवस	32-33

सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर शहर न्यायालय होगा।
पत्रिका में प्रकाशित पठनीय लेख/सामग्री के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
पत्रिका प्रकाशन का इस सम्बन्ध में कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यतीन्द्र कुमार वर्मा
सम्पादक- वीरगुर्जर, लोनी, मेरठ (उ.प्र.)
स्व. श्री रामगोपाल गार्ड
प्रदेशाध्यक्ष-राज.गुर्जर महा.,जयपुर

प्रकाशन / प्रधान संरक्षक :
कालूलाल गुर्जर
पूर्व मंत्री, सरकारी मुख्य सचेतक, राज.सरकार

प्रकाशक/सम्पादक :
मोहनलाल वर्मा
मो. 9782655549

प्रकाशन व्यवस्थापक :
सरदार सिंह चेची- मो. 9829063710

प्रबन्ध सम्पादक :
वी.बी. जैन- मो. 9261640571

सह-सम्पादक :
भावना गुर्जर- मो. 8890499200
अमरसिंह कसाना- मो. 9460875478
छीतरलाल कसाना- मो. 9929560765
शैतान सिंह गुर्जर- मो. 9414315639
देवनारायण रगगल- मो. 9414321012

विधि सलाहकार :
प्रहलाद सिंह अवाना- मो. 9414752520
हजारीलाल सराधना- मो. 9414752519

कार्यालय व्यवस्थापक :
सौरभ गुर्जर - मो. 9950176814
समस्त पद अवैतनिक हैं।

सम्पादकीय कार्यालय: 3714, कालों का मौहल्ला, के.जी.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003
E-mail:devchetnanews@gmail.com

देव चेतना मासिक पत्रिका सहयोग राशि

प्रधान संरक्षक 11,000/-
मुख्य संरक्षक 5,100/-
पंचवर्षीय - 1100/-

बैंक खाता : मोहनलाल वर्मा
(Savings A/c)
बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
शाखा- जौहरी बाजार, जयपुर
खाता सं. 61163439684
IFSC: SBIN0031029

सम्पादकीय...

राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में गुर्जर समाज भाजपा और कांग्रेस दोनों की ही नीतियों से आक्रोशित हैं। उत्तरप्रदेश के दादरी में गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिरभोज की प्रतिमा के अनावरण घटना को गुर्जर समाज अभी भूला नहीं है। वहीं हरियाणा प्रदेश के कैथल एवं अभी हाल ही में 25 सितम्बर को ग्वालियर मध्यप्रदेश में पुलिस द्वारा शान्तिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर किये अत्याचार से पूरे देश का गुर्जर समाज आक्रोशित है।

राजस्थान प्रदेश में पिछले विधानसभा चुनाव में गुर्जरों ने सचिन पायलट को मुख्यमंत्री बनाये जाने के लिये कांग्रेस के पक्ष में एकतरफा मतदान किया था। कांग्रेस ने सचिन पायलट के साथ जो व्यवहार किया है वह भी गुर्जरों की आंखों में खटक रहा है। जहाँ कहीं भी गुर्जर समाज के सभा सम्मेलन होते हैं वहीं एक बात उभरकर आती है, क्यों न गुर्जर समाज अपना राजनैतिक दल बनाकर अपना नेतृत्व विकसित करें। स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् किसी भी सरकार में गुर्जरों की मांगों पर न्यायपूर्ण निर्णय नहीं लिये हैं। सभी प्रदेशों में गुर्जर पशुपालक, घुमन्तू और चरवाह जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सरदार पटेल द्वारा गुर्जरों को विमुक्त जनजाति का दर्जा प्रदान करके अपराधिक जनजाति के अभिशाप से मुक्त किया था। केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा विमुक्त जनजाति के रूप में देशभर के गुर्जरों को कभी भी स्वीकार नहीं किया गया। राज्यों की विमुक्त जनजाति की सूची में राजस्थान और मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, हरियाणा और उत्तराखण्ड में गुर्जरों को नहीं दर्शाया गया है। हिमाचल व जम्मू-कश्मीर के गुर्जरों के साथ में अनुसूचित जनजाति में सम्मिलित करके आंशिक न्याय किया गया है। आज भी हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर एवं उत्तराखण्ड के वनगुर्जर शैक्षणिक व आर्थिक उन्नति के लिए तरस रहे हैं।

राजस्थान प्रदेश में अपनी जनसंख्या के अनुसार गुर्जरों का दावा है कि प्रदेश के 34 विधानसभा क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ से गुर्जरों को प्रत्याशी बनाया जाये तो वे जीत दर्ज करवा सकते हैं। वहीं प्रदेश के 55 विधानसभा क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ गुर्जर हार-जीत सुनिश्चित करने में निर्णायक भूमिका अदा करते हैं। राजस्थान प्रदेश के चार लोकसभा क्षेत्रों में गुर्जरों का बाहुल्य

राजनैतिक उपेक्षा के शिकार गुर्जरों ने राजनैतिक दलों को चेताया

है। वहीं छः लोकसभा क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ गुर्जर मतदाता जिसके पक्ष में होते हैं उसी दल के प्रत्याशी की जीत होती है। मध्यप्रदेश के गुर्जरों ने भी राजनैतिक दलों से अपनी जनसंख्या के अनुपात में विधानसभा चुनाव में प्रतिनिधित्व दिये जाने की मांग की है। मध्यप्रदेश के गुर्जर संगठनों ने 20 विधानसभा क्षेत्रों के लिए दावेदारी की है। गुर्जरों का दावा है कि मध्यप्रदेश में 74 विधानसभा क्षेत्रों पर गुर्जरों का बाहुल्य है तथा प्रदेश के 13 लोकसभा क्षेत्रों में से 6 में गुर्जर अपनी दावेदारी जताते हैं वहीं 7 लोकसभा क्षेत्रों में निर्णायक भूमिका अदा करते हैं।

राष्ट्रीय राजनीति में लम्बे समय से गुर्जर समाज अपनी उपेक्षा अनुभव कर रहा है। राजस्थान प्रदेश और मध्यप्रदेश में 2023 में विधानसभा के चुनाव तथा 2024 में लोकसभा के चुनाव सम्पन्न होने जा रहे हैं। गुर्जर समाज में राजनैतिक दलों को चेताते हुए अन्दरखाने जिस पार्टी द्वारा गुर्जरों को प्रतिनिधित्व दिया जायेगा उसी के पक्ष में मतदान करने की ठान रखी है। गुर्जर नेताओं की मानें तो उनके तार छोटे-मोटे राजनैतिक क्षेत्रीय दलों से भी जुड़े हुए हैं वहीं गुर्जर सामाजिक कार्यकर्ताओं में राजनैतिक दलों का गठन भी कर रखा है।

यह इतिहास बताता है कि गुर्जर जो ठान लेते हैं उसी राह पर चल पड़ते हैं परिणाम भले ही कुछ भी आयें देश के लम्बे समय का इतिहास गुर्जरों की इस प्रवृत्ति को बयान कर रहा है। ऐसे में यदि राजनैतिक दलों ने गुर्जर शक्ति का सम्मान और गुर्जरों के साथ सामाजिक-राजनैतिक स्तर पर न्याय नहीं किया तो निश्चय ही इस बार गुर्जरों ने अपने बूते पर राजनैतिक महाभारत का युद्ध करने की ठानी है। अन्दरखाने पूरे देशभर का गुर्जर समाज एकजुट है और उसकी निगाहें राजनीतिक दलों की दूरदर्शिता पर लगी हुई है कि वे उनके साथ कितना न्याय करते हैं। यदि ऐसा नहीं हुआ तो गुर्जर जीतने के स्थान पर हराने की गुप्त मंत्रणा अन्दरखाने कर चुके हैं। राजनैतिक दल यह नहीं सोचें कि गुर्जरों को राजनीति करना नहीं आता है इस गलतफहमी को उन्हें दूर कर लेना चाहिए कि गुर्जर निरन्तर लड़ाई जारी रखने के अभ्यस्त हैं।

महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर गुर्जर इतिहास संरक्षण समिति (भोपुरा) गाजियाबाद उत्तर प्रदेश के तत्वाधान में इतिहास बचाओ- स्वाभिमान बचाओ संकल्प संगोष्ठी संपन्न

गाजियाबाद उत्तर प्रदेश। अखिल भारतीय गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर यशवीर सिंह की अध्यक्षता में इतिहास बचाओ- स्वाभिमान बचाओ संकल्प संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

संगोष्ठी में मुख्य रूप से गुर्जर इतिहास को लेकर जातीय वैमनस्य पैदा करने का षड्यंत्रपूर्वक तथाकथित लोगों द्वारा

गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य, कुषाण साम्राज्य, चौहान व तोमर साम्राज्यों को लेकर जो विवाद इतिहास में भ्रम पैदा करने के लिए उत्पन्न किये जा रहे हैं, उनके प्रति चिंता व्यक्त की गई।

मध्यप्रदेश के ग्वालियर महानगर में 25 सितंबर को गुर्जर समाज के लोगों पर प्रशासन द्वारा पुलिस के माध्यम से जो जुल्म ढाए गए उनकी निंदा करते हुए एक प्रस्ताव पारित करके केंद्र व राज्य सरकार से अविलंब घटनाक्रम की जांच करवाने तथा निर्दोष लोगों पर पुलिस द्वारा दर्ज मुकदमों को वापस लेने की मांग की गई।

अखिल भारतीय गुर्जर महासभा के अध्यक्ष डॉ. यशवीर सिंह एवं राष्ट्रीय गुर्जर समन्वय समिति के संस्थापक अंतराम तंवर को यह दायित्व दिया गया।

आयोजित संगोष्ठी में इतिहास को लेकर न्यायालय में जो विवाद चल रहे हैं उनकी पैरवी सुनिश्चित करने तथा समाज के वकीलों द्वारा इस कार्य को अंजाम देने का निर्णय लिया गया। इसके लिए आवश्यकता हो तो अनुभवी अधिवक्ताओं से भी परामर्श और पैरवी करवाने का निर्णय लिया गया। समय-समय पर गुर्जर समाज के संगठनों द्वारा राज्य एवं केंद्र में सत्तापक्ष के संबंधित नेतृत्व से इन तमाम विषयों पर संवाद स्थापित करने एवं गुर्जर समाज की व्यथा से संबंधित मुद्दों को लेकर ज्ञापन प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया। सामाजिक संगठनों से आवाहन किया गया कि समाज की समस्याओं को लेकर चलाए जा रहे आंदोलन हिंसक और उग्र स्वरूप धारण न करें इसके लिए नेतृत्व को अपना दायित्व सुनिश्चित करना चाहिए। समय -समय पर इतिहास के संबंध में इतिहास सम्मेलन आयोजित करके इतिहास का पुनर्लेखन, प्रकाशन एवं वितरण सुनिश्चित करने की कार्य योजना बनाने पर भी विचार विमर्श हुआ। राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक राजनीति में जनसंख्या के अनुपात में गुर्जरों का प्रतिनिधित्व प्राप्त करने के लिए सामाजिक स्तर पर ओबीसी के हितों में कार्य करने वाले संगठनों के साथ सामंजस्य स्थापित करने पर बल दिया गया। समाज की उन्नति के लिए कार्य करते समय समाज के अन्य किसी वर्ग के प्रति विचार व्यक्त करने में सावधानी पूर्वक सौहार्दपूर्ण

व्यवहार का ध्यान रखा जाने पर भी चर्चा हुई।

संगोष्ठी में देश भर से उपस्थित प्रतिनिधियों ने गुर्जर समाज के अस्तित्व, अस्मिता और अधिकारों के लिए समाज के उद्वेलित होने के घटनाक्रम पर अपने उद्बोधन में प्रकाश डाला मुख्य रूप से गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मोहनलाल वर्मा, राष्ट्रीय सचिव शैतान सिंह गुर्जर ने इतिहास में क्यों विवाद उत्पन्न किए गए हैं? विषयों पर प्रकाश डाला। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉक्टर यशवीर सिंह ने समाज को उद्वेलित करके अराजक स्थिति उत्पन्न करके लाशों पर राजनीति करने वाले लोगों के प्रति समाज को सावधान रहने का आह्वान किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में समाज में शैक्षिक संस्थानों की स्थापना पर बल दिया। अपने संबोधन में वक्ताओं द्वारा समाज की शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर भी अपने विचार व्यक्त किए गए। आयोजित संगोष्ठी में यह भी तय किया गया कि समाज की युवा शक्ति को लोकतांत्रिक व्यवस्था में किस प्रकार अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए कार्य करना चाहिए, इसके लिए भी एक नीति निर्धारित की जाए।

महात्मा गांधी जयंती पर आयोजित संगोष्ठी का मंच संचालन राजपाल सिंह कसाना द्वारा किया गया। संगोष्ठी में प्रतिभागियों को नेपाल सिंह कसाना ने संबोधित करते हुए समाज के शिक्षा में अग्रणी बच्चों को उनके द्वारा स्थापित ट्रस्ट द्वारा सहायता उपलब्ध करवाने का भी जिक्र किया। संगोष्ठी में बाबू सिंह आर्य, ज्ञानचंद कसाना, के.पी. सिंह गुर्जर, ईश्वर मावई, राजीव भाटी, वीरेंद्र सिंह प्रोफेसर, डॉक्टर आर.पी. सिंह, डॉ. वीरेंद्र कसाना, रिटायर्ड प्रिंसिपल मास्टर अशोक कुमार, मनीष कसाना, एडवोकेट राजेंद्र सिंह कसाना, प्रधान विक्रम सिंह, अंकुर कसाना, एडवोकेट कबीर कसाना एडवोकेट राजेंद्र मावई, रणवीर मास्टर, सुखबीर पहलवान, महाराज सिंह मावई, महाराज सिंह इंजीनियर, निरंजन सिंह मास्टर, जिले सिंह कपासिया, राजकुमार कसाना, दिवाकर विधूड़ी, भगवान प्रधान, राजवीर प्रधान, रोहिताश्व एडवोकेट, मास्टर आजाद सिंह, अशोक मावई, ओम प्रकाश अधाना, सुभाष प्रमुख मेरठ, जयवीर सिंह मध्यप्रदेश ने भी संगोष्ठी को संबोधित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। राजवीर कसाना ने सभी आगन्तुक प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। राजपाल सिंह कसाना ने संगोष्ठी के आयोजन के लिए स्थान उपलब्ध करवाने तथा सभी व्यवस्थाओं के लिए राजवीर कसाना रिटायर्ड डीवाईएसपी के प्रति आभार व्यक्त किया।

गुर्जर समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक ऐतिहासिक, राजनीतिक जागरण पर चर्चा

दिल्ली। अखिल भारतीय गुर्जर विकास संगठन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदीश सिंह लोहिया के अंधेरिया मोड़ दिल्ली स्थित निवास स्थान पर गुर्जर विकास संगठन के पुराने साथियों

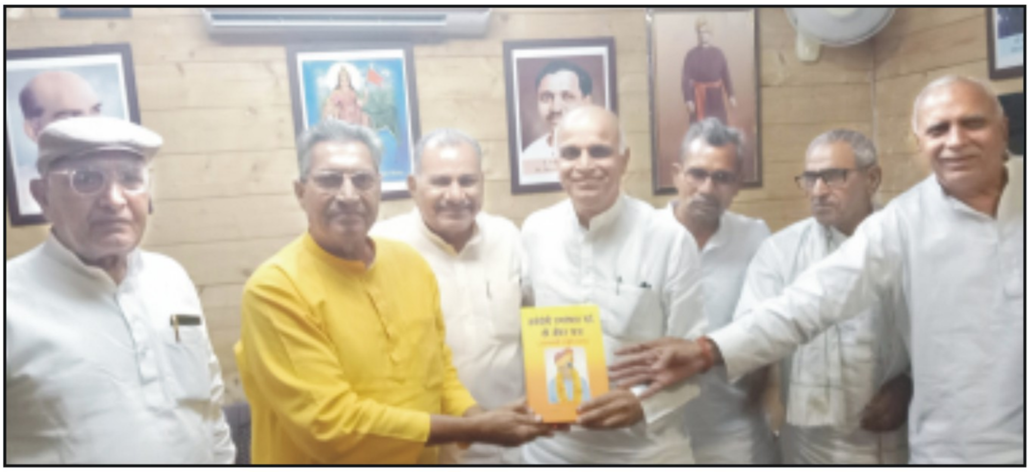

की चर्चा गोष्ठी आयोजित हुई। गोष्ठी में वर्तमान समय में गुर्जर समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक ऐतिहासिक दृष्टि से संबंधित समाज में उपस्थित समस्याओं तथा कार्यरत संगठनों की कार्य प्रणाली पर विस्तृत रूप से चर्चा हुई। जिसमे जयपुर से मोहन लाल वर्मा, शैतान सिंह गुर्जर ने अखिल भारतीय गुर्जर विकास संगठन के पूर्व राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष स्वर्गीय श्री राम गोपाल गार्डन जन्मशती स्मृति ग्रंथ की प्रति गुर्जर विकास संगठन के पदाधिकारी को भेंट की। संगठन की कार्यशैली पर विचार रखे।

गुरुग्राम से पूर्व विधायक तेजपाल तँवर, नथु सरपंच, रणबीर लोहिया, अजीतपाल, फरीदाबाद से हंसराज कपासिया, दिल्ली से जगदीश लोहिया, जगदीश बिधुड़ी ने अपने विचार रखे। जगदीश लोहिया ने अखिल भारतीय गुर्जर विकास संगठन के मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश के कार्यकर्ताओं से उनकी हुई चर्चा पर भी प्रकाश डाला। चर्चा पश्चात् सभी कार्यकर्ताओं ने वर्तमान समय में गुर्जर समाज की विभिन्न प्रदेशों में उठ रही ज्वलंत मांगों तथा राष्ट्रीय राजनीति में जनसंख्या के अनुपात में गुर्जरों की प्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा की जा रही उपेक्षा पर चिंता व्यक्त की गई।

राजस्थान, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर व मध्य प्रदेश में समय-समय पर समाज द्वारा उठाई जा रही आरक्षण की मांग तथा घुमंतु, अर्ध-घुमंतु चरवाहा गुर्जर समुदाय के लिए केंद्र सरकार से एवं राज्य सरकारों से गुर्जर समाज के हित साधन के लिए आयोग गठन करने के विषय पर भी चर्चा हुई।

चर्चा पश्चात् उपस्थित सभी पदाधिकारी ने एक स्वर से जल्द ही सामाजिक समस्याओं को लेकर सभी संगठनों को साथ लेकर कार्य करने की योजना

बनाने के लिए दिल्ली में सभी प्रदेशों के प्रतिनिधियों की बैठक आयोजित करने का निर्णय लिया गया। संगोष्ठी के समापन पर जगदीश लोहिया ने सभी आगंतुक प्रतिनिधियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

- *जिसे अपनी **मेहनत** से हासिल होता है वह सदैव दूसरों की **कद्र** करता है।*
- ***धन** हमेशा के लिए **'मित्र'** नहीं होता...*

गुर्जर महाकुंभ ग्वालियर घटनाक्रम को लेकर गुर्जर समाज लामबद्ध

गुर्जर समाज द्वारा ग्वालियर में 25 सितंबर को आयोजित गुर्जर महाकुंभ के अवसर पर प्रशासन द्वारा जिस प्रकार की घटना को अंजाम दिया गया है। उसे लेकर गुर्जर समाज में भारी आक्रोश है। देशभर में गुर्जर समाज के संगठनों ने प्रशासन द्वारा किये इस निर्मम अत्याचार की निंदा की है। समाचार पत्रों में जो कुछ भी छपा है वह गुर्जर समाज संगठनों के अनुसार अति रंजीत है। गुर्जर समाज के द्वारा उपद्रव नहीं किया गया उपद्रवी बाहरी तत्व थे जिन्होंने ज्ञापन देने जाते हुए गुर्जर समाज के लोगों के बीच घुसकर अपने षड्यंत्र को अंजाम दिया है। सोशल मीडिया पर इस आशय का वीडियो भी वायरल हो रहा है। जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप गुर्जर नेताओं ने संपूर्ण घटनाक्रम की उच्च स्तरीय जांच करवाने तथा निर्दोष लोगों पर की जा रही दमनात्मक कार्रवाई को अविलंब निरस्त करने का आग्रह किया है। समाज द्वारा संपूर्ण घटना की जांच करवाने, निर्दोष लोगों को रिहा करने तथा आरोप मुक्त करने की मांग को लेकर देश भर में सभा सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं। समाचार पत्रों में जो कुछ छपा वह केवल बाहरी दृश्य के समाचार हैं, ज्ञापन देने जाने वाले तथा गुर्जर महाकुंभ के अवसर पर आयोजनकर्ता तथा संबोधनकर्ताओं का इन समाचारों से हटकर ही कहना है।

शहर में महा उपद्रव, 11 उपद्रवियों को भेजा जेल, फरार आरोपियों पर 3-5 हजार रुपए का इनाम। बसपा सांसद नागर, सपा विधायक प्रधान, कांग्रेस विधायक मावई, साहिब सिंह पर एफआईआर, अधिकांश आरोपी उपद्रव में थी शामिल। क्षत्रिय समाज उपद्रवियों पर रासुका की मांग करेगा।

दैनिक भास्कर 26 सितंबर,

गुर्जरों का महाकुंभ, सामाजिक कार्यक्रम के नाम पर जुटे हुड़दंगी, 5 घंटे उपद्रव, 12 पुलिसकर्मी घायल, दहशत, कलेक्ट्रेट में अफसरों, शिरोल -झांसी रोड-व डबरा हाईवे पर जनता के 162 वाहन तोड़े,

महाउपद्रव, जो दिखा उसे पिटा, पुलिस भी नहीं छोड़ी, रात 2 बजे 700 उपद्रवियों पर केस दर्ज, 200 अश्रु गैस के गोले छोड़े व 50 आवाजी कारतूस, बड़ा बवाल, शहर के तीन सबसे बड़े अधिकारियों पर हमला किसकी शह पर हुआ ?

रास्ते में तीन जगह हंगामा फिर भी हाथ बांधे रही पुलिस, अफसर बचकर भागे, ज्ञापन देने से मना किया फिर रैली के रूप में आए, महिला थाने में ज्ञापन लेने गए थे पर वहां दिया नहीं। समाज के लोग मुझे फूल बाग पर ज्ञापन देना चाहते थे। वहां उनसे ज्ञापन लेने एडीएम एसपी को भेजने के लिए कहा पर वे तैयार नहीं हुए।

अक्षय कुमार सिंह कलेक्टर, आयोजकों पर कार्रवाई की जाएगी।

गुर्जर जागरण पदयात्रा समापन के नाम पर यह कार्यक्रम हुआ था। ज्ञापन देने के दौरान हिंसा हुई है। जो जिम्मेदार हैं उन पर कार्रवाई होगी।

राजेश सिंह चंदेल एसपी।

हमारे संगठन के लोग शामिल नहीं थे,

कार्यक्रम के बाद समाज के लोग कलेक्ट्रेट पहुंचे तो कुछ शरारती तत्वों ने तोड़फोड़ कर दी। हमारे संगठन के लोग इसमें शामिल नहीं थे।

इंजीनियर सुरेंद्र सिंह उपसंयोजक शीतला माता टीम।

समाचार पत्रों में छापे समाचार स्वयं इस बात के साक्षी हैं संपूर्ण घटनाक्रम की उच्च स्तरीय न्यायिक जांच होनी चाहिए तथा दोषियों को बेनकाब किया जाना चाहिए। संपूर्ण घटनाक्रम देश में जातीय वैमनस्य फैलाने का सुनियोजित प्रयास नजर आ रहा है। मध्य प्रदेश, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में भारतीय इतिहास के महान चरित्र गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिर भोज, अंतिम हिंदू सम्राट गुर्जर पृथ्वीराज चौहान एवं पृथ्वीराज चौहान के नाना अनंगपाल तोमर के नाम पर यह संपूर्ण घटनाक्रम रचा जा रहा है। राज्य सरकार, केंद्र सरकार भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय, इतिहास अनुसंधान परिषद, और न्यायिक व्यवस्था क्यों नहीं इस पर संज्ञान ले रही है ? जबकि यह संपूर्ण विषय सोशल मीडिया द्वारा देश भर में लंबे समय से गर्माया रहा है। प्रथम दृष्टि या संपूर्ण घटनाक्रम से

सिद्ध होता है कि इस सारे घटनाक्रम के पीछे सुनियोजित राजनीतिक षड्यंत्र कार्य कर रहा है। जिनका महज उद्देश्य भारत राष्ट्र में सामाजिक विभाजन को गति देने का प्रयास लगता है। इस दृष्टि से भी यह विषय संपूर्ण देश की सामाजिक एकता की दृष्टि से उच्च स्तरीय जांच एवं त्वरित कार्यवाही की अपेक्षा रखता है।

मोहन प्रिया कलावती

क्षीरसागर मंथन मधुर-मधुर शब्द समुद्र

हमारे यहां सृष्टि और प्रलय प्रतीक क्षीरसागर का उल्लेख प्राप्त होता है। क्षीर शब्द का अर्थ मधुर है। क्षीरसागर में शेषनाग की सैया पर भगवान विष्णु के नाभि कमल से प्रजापिता ब्रह्मा की उत्पत्ति कही गई है। विष्णु के निश्वास से ही वेदों की उत्पत्ति भी कही गई है।

दिव्य नाद प्रतीक वेद ही शब्द ब्रह्म है। श्रीकृष्ण ही राधा है और राधा ही श्रीकृष्ण है। श्रीकृष्ण अवतार को 16 कला पूर्ण अवतार कहा गया है। इस अर्थ 16 कलाओं की अधिष्ठात्री श्री राधा ही कलावती है और कृष्ण ही मोहन है।

श्रीकृष्ण और राधा ही लौकिक अलौकिक रस की दृष्टि से मानव जीवन में रस के पूर्ण आश्रय है। सांसारिक मानव जीवन में भी हृदय स्थित रस का शब्द ही पूर्ण या अपूर्ण रीति से अनुभव कर सकता है। सांसारिक जीवन में रस का सर्वत्र अनुभव करने वाली स्त्रियां ही है, और यह भगवान के द्वारा कहना इसकी गरिमा को घटाना है, फिर भी समझने के लिए आनंद या रस को मज़ा या स्वाद शब्द से कहा जा सकता है, दोनों का आश्रय अनुभव है। इस रस को शास्त्रों में सच्चिदानंद कहा गया है। रस अपने स्वरूप के कारण वाणी में नहीं समाता।

स्त्री पुरुष अथवा मानव मात्र में एक दूसरे के प्रति उत्पन्न प्रेम जो रस की ही एक किरण है वह प्रेम अमृत की तरह मधुर है और त्रिभुवन के दुखों को दूर करने में समर्थ है.. प्रेम भी अलौकिक आनंद का एकात्म अंश है। मानव हृदय मन मस्तिष्क में रस का उद्वेलन श्रृंगार रस की भावना है। रस से आनंद मैत्री और प्रेम भावनाएं पृथक नहीं है। उन सभी भावनाओं की अधिष्ठात्री देवता राधस् है, यह प्रथम सिद्धि है।

राधा शब्द का अर्थ है, तदरूप होना। यह राधिका ही श्रीकृष्ण की नित्य सिद्धि प्रिया है, मदन मोहन प्रिया शब्द में लौकिक और अलौकिक दोनों रस रूप समाहित है। अलौकिक रूप से कह सकते हैं-श्रृंगार रस भावना में जब पुरुष अपनी प्रिया की भावना करता है तब वह अपने भाव को ही स्त्री रूप देता है। भाव को स्त्री रूप बनाए बिना स्त्री की भावना ही नहीं हो सकती। इसी प्रकार जब स्त्री अपने प्रिय की भावना करती है तब उसे भी अपने भाव को पुरुष रूप देना होता है। स्त्री के हृदय में भावात्मक पुरुष है और पुरुष के हृदय में भावात्मक प्रिया स्त्री है। इस दृष्टि से प्रिया प्रियतम भाव पदार्थ दोनों ही नित्य सिद्ध और रस रूप है।

कथन है-दो के बिना रस का स्वाद वैसा नहीं आता, इसलिए भगवान स्वयं दो हो जाते हैं-आत्मा और परमात्मा! भगवान श्रीकृष्ण और उनकी सिद्धि राधा श्री राधिका दोनों ही अलौकिक है, इसलिए उनका दिव्य समागम ही (महारास)है।

- मोहनलाल वर्मा

सूर्योदय स्वयं की खोज गुर्जरोदय

सनातन धर्मी प्रातः स्मरणीय गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिर भोज

सूर्य गुर्जर गाय और लोकवेद
श्री देवनारायण फड़ लोकवार्ता

सृष्टि में इतिहास की खोज एवं इतिहास लेखन सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। इतिहास वेत्ता और इतिहास लेखन का अधिकारी वह है, जिसने स्वयं को पा लिया है। इतिहास लेखन के नाम पर वारेन हेस्टिंग्स के काल से अंग्रेजों द्वारा प्रारंभ की गई अखंड भारत वर्ष के इतिहास लेखन की परम्परा

भ्रांति मुलक और अज्ञान युक्त है। अज्ञान संघर्ष करता है और ज्ञान प्रतीक्षा करता है, अज्ञान का स्वत: स्फूर्त ज्ञान प्राप्त करने की। अखंड भारत वर्ष का सांस्कृतिक इतिहास मंत्र दृष्टा भारतीय ऋषियों और तंत्रज्ञों ने वेद-इतिहास पुराण-यंत्र-मंत्र-तंत्र साहित्य 'स्वभाव स्वतंत्र विज्ञान' रूप संग्रहित किया है।

हिंदू धर्म संस्कृति रक्षक गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिर भोज, पृथ्वीराज चौहान और अनंगपाल तोमर की प्रतिमा के अनावरण को लेकर भारतीय वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत (क्षत्रिय वर्ण) के अंतर्गत कर्म विज्ञान आधारित जन्मना जाति सामाजिक व्यवस्था स्वरूप मूलत: गुर्जर-राजपूत इतिहास की पुस्तकों में उल्लेखित भ्रांति पूर्ण साभिप्राय: राजपूत शब्दार्थ के राजपूत जाति शब्द प्रयोग को लेकर परस्पर विवाद कर रहे हैं।

गुर्जर और राजपूत जाति शब्द के सही अर्थ को ग्रहण करने के लिए हमें भारतीय कर्म मीमांसा विज्ञान और गोत्र-प्रवर शब्दार्थ का पुनरावलोकन करना होगा। भारतीय कर्म मीमांसा कारो ने वेद विज्ञान, स्वभाव- स्वतंत्र तंत्र विज्ञान, जैन और बौद्ध दर्शन तथा हिंदू परम्परा में पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्वीकार करते हुए कर्म को जन्म और पुनर्जन्म का कारण माना है। कहीं-कहीं कर्म और ईश्वर को एक रूप अभिन्न स्वीकार किया है।

यह सनातन सत्य है कि- अज्ञान में अंत: क्रांति और जीव जगत के मूल स्वरूप की ओर उत्क्रांति या विकास- खनिज कोटि से देव कोटी तक सृष्टि क्रम अनादि काल से अनंत काल तक चलता ही रहेगा। इसे गीता में अर्जुन को दिये गीता उपदेश के दूसरे श्लोक से समझा जा सकता है- मैं पहले कभी नहीं था, यह बात नहीं है, इसी प्रकार तुम और यह राजा लोग पहले नहीं थे, यह बात भी नहीं है,यह भी नहीं है कि हम सब आगे ना होंगे। यह पुनर्जन्म परम्परा त्रिकाल बाधित रूप से चलने वाली है। इसी प्रकार कर्म के महत्व को आज पूरा संसार भूल गया है। प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक जाति पर कर्म का प्रभाव कैसा नियमित पड़ता है, इसकी और आज किसी का ध्यान नहीं है।

गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिरभोज, पृथ्वीराज चौहान तथा अनंगपाल तोमर की जाति पर विवाद फैलाने वाले गुर्जरों-राजपूतों और देश की राजनीति को भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि वह अपने कर्म की इस प्रतिक्रिया से बच नहीं सकते हैं, इतिहास उन्हें कभी क्षमा नहीं कर सकता है।

सच्चिदानंदधन ईश्वर द्वारा भूतों की उत्पत्ति को कर्म कहा गया है। त्रिगुणात्मिका प्रकृति में रजोगुण से स्वभाव सिद्ध स्पंदन को कर्म कहा गया है। मीमांसा कारों के अनुसार

कर्म के तीन भेद हैं-सहज कर्म, जैव कर्म और ऐश कर्म। सहज कर्म प्राकृतिक स्पंदन के साथ प्रकट होता है। आदि सृष्टि में ब्रह्मांड गोलक का बनना, जीव सृष्टि का उद्भिज रुप उत्पन्न होना, सहज कर्म के अंतर्गत उद्भिज योनि, स्वेदज योनि, अंडज योनि, जरायुज योनि में उत्पन्न होता हुआ जीव अंत में पूर्ण अवयव मनुष्य योनि में पहुंच जाता है।

मनुष्य योनि में जैव कर्म का उदय होता है, यही गुर्जरोदय 'स्वयं की खोज' सूर्योदय गुरुत्तर गुरु वीर गुर्जर: जैव कर्म दिव्यत्व प्राप्ति का हेतु है। जिसका प्रतीक उत्तराखंड राज्य के द्वार हाट नगर में गुर्जर देव मंदिर है।

गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिरभोज को अपना पूर्वज मानने वाले गुर्जर और राजपूतों को पहले यह प्रत्यक्ष कर लेना चाहिए कि अखंड गुर्जर देव मंदिर को खंडहर रूप में परिवर्तित किसने और क्यों ? किया है ? संपूर्ण अखंड भारत के खंडहर मंदिर उनकी वीरता और विवाद पर प्रश्न चिह्न अंकित कर रहे हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है -कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।

इस दृष्टि से गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिरभोज, पृथ्वीराज चौहान और अनंगपाल तोमर की प्रतिमा को लेकर अजेय कर्मवीर महापुरुषों की जाति को लेकर अनर्गल विवाद करने वाले लोगों को भारतीय गोत्र-प्रवर महिमा की दृष्टि से अपने पूर्वजों के गोत्र प्रवर का पुनरावलोकन कर लेना चाहिए।

भारतीय वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत जन्मना जाति व्यवस्था की निरंतरता को बनाए रखने के लिए चार अभेद्य दुर्ग कहे गए हैं। यह हमें नहीं भूलना चाहिए।

गोत्र- प्रवर अर्थात कुल परंपरा रजो-वीर्य शुद्धि मुलक संतति प्रजनन, जिसका हेतु वर्ण व्यवस्था कहीं गई है। जिसमें जन्म से जाति मानने की दृढ़ आज्ञा है। प्रवृत्ति मुलक आश्रम व्यवस्था और सतीत्व मुलक नारी धर्म की प्रतिष्ठा। गोत्र-प्रवर का संबंध सृष्टि के आदि से प्रचलित है।

प्रजापति द्वारा मानस सृष्टि से उत्पन्न ऋषियों से गोत्र - प्रवर विज्ञान का उत्स है। वर्तमान की क्षत्रिय और वैश्य जातियों में ऋषि- पुरोहित गोत्र से गोत्र- प्रवर मानने की सामाजिक व्यवस्था भी प्रचलित है। वर्तमान में स्वजातीय अभिमान, स्वधर्म गौरव जन्मातंर विज्ञान और रजो-वीर्य शुद्धता का गौरव स्थापित करने हेतु गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिर भोज, पृथ्वीराज चौहान तथा अनंगपाल तोमर के वंशजों को परस्पर भ्रांति मुलक विवादों को भुलाकर राजनीति के हाथों का खिलौना बनने के बजाय, हिंदुत्व पुनर्जागरण के कार्य में लगकर अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित जीवन मूल्य की पुर्नस्थापना के क्रम में देश धर्म और संस्कृति की रक्षा के कार्य में लगना चाहिए। यह वर्तमान भारत राष्ट्र के सभी सनातन संप्रदाय धर्मी हिंदुओं और कालांतर में उनसे अलग हुए सामाजिक जातीय समूहों से प्रार्थना है।

गुर्जर लोक संस्कृति पुनर्जागरण

आर्थिक असमानता और आध्यात्मिक समानता

भारतीय वर्णाश्रम व्यवस्था परिवर्तन के दौर से गुजरते हुए जन्मना जाति का रूप ग्रहण कर चुकी है। परिवर्तनशील सामाजिक धार्मिक व्यवस्था के अंतर्गत जन्मना जाति व्यवस्था के संबंध में पिछले सैकड़ों वर्षों से कला और सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से बहुत कुछ ऐसा कहा गया है जिसमें अप संस्कृति की झलक मिलती है। हम सब जानते हैं कि शरीर सभ्यता है तो संस्कृति आत्मा है। दृश्य पदार्थ रूप जगत का आधार अदृश्य जगत है, जहां से सब कुछ प्रवाहित हो रहा है और दृश्य जगत से सब कुछ आकर्षण विकर्षण गति रूप संप्रेषित है। इतिहास की पुस्तकों में गुर्जरों का उल्लेख कहीं क्षत्रिय, कहीं वैश्य, कहीं ब्राह्मण और कहीं शूद्र मिलता है वही प्रत्यक्ष हिंदू सिख मुस्लिम व अन्य संप्रदाय धर्मी गुर्जर हैं। यहां प्रश्न यह उपस्थित होता है कि शरीर की दृष्टि से गुर्जर वर्ण, जाति, धर्म संस्कृति क्या है? अथवा आत्मा की दृष्टि से गुर्जर लोक संस्कृति क्या है?

जिसके पुनर्जागरण की आवश्यकता है। अखंड भारत राष्ट्र के जिन जिन देशों में गुर्जर हैं राजनीतिक दृष्टि से उनकी राष्ट्रीयता अलग-अलग है तो फिर गुर्जरों की राष्ट्रीयता क्या है? अपने मूल स्वरूप में गुर्जर हिंदू नहीं तो और क्या है? यह बात गुर्जर लोक संस्कृति पर विमर्श करने से ही समझ में आ सकती है।

वैश्विक धरातल पर सामाजिक राजनीतिक आर्थिक जीवन में आए बदलाव को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान भारतीय लोकतंत्रात्मक राज्य व्यवस्था के बने रहने की प्रमुख शर्त है देशवासियों में आध्यात्मिक समानता। परंतु विभिन्न मत मतांत्रों में बंटे भारतीयों में आत्मानुशासन, निष्ठा, ईमानदारी, बंधुत्व प्रेम और व्यापक दृष्टिकोण ही आध्यात्मिक समानता की राह पर आगे बढ़ने का हौसला दे सकताहै। यह कार्य लोक संस्कृति जागरण से ही संभव है।स्वतंत्रता के पश्चात हमारे यहां आर्थिक असमानता में जिस दर से वृद्धि हुई है उसके अनुरूप आध्यात्मिक समानता का बीज अंकुरित नहीं हो पाया है तभी आज प्रत्येक भारतवासी अपने को राष्ट्र से पृथक अपनी अपनी जाति संप्रदाय धर्म के नाम पर अलग, पहचान बना कर जी रहा है। बढ़ती आर्थिक अस मानता की खाई को किस प्रकार से पाटा जाए, जबकि भारतीय लोकतंत्रात्मक राज्य व्यवस्था धीरे-धीरे चाहे वह किसी भी राजनीतिक पार्टी की सरकार रही हो पूंजीवादी औद्योगिक और बहुराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का स्वरूप ग्रहण करती जा रही है, यह सबकुछ होते हुए भी अलग-अलग विचारधाराओं के लोग अपने राजनीतिक हित साधन के लिए, किसान, मजदूर और भूमिहीन वंचित वर्ग के मानस में संकुचित दृष्टिकोण विकसित करने से हजारों वर्ष की गुलामी सहने के बाद भी आज नहीं चूक रहे हैं। किसानों के नाम पर नेता तो बहुत बने, पर आज तक कहीं यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि किसानों के हित के लिए सही किसान नीति क्या है? कृषि उत्पादन में जिस प्रकार उत्पादकता का लक्ष्य प्राप्ति के लिए जिस कृषि क्रांति के दावे किए गए हैं उसकी पोल खुलती जा रही है। कृषि क्रांति के नाम पर मानव के स्वास्थ्य के साथ में जो खिलवाड़ हुई है जिसकी कभी पूर्ति नहीं हो सकती। क्या कभी किसी ने इसके विरुद्ध आंदोलन किया की कृषि क्रांति के नाम पर मनुष्य के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ क्यों किया जा रहा है। नहीं, क्योंकि आज हम अपनी संकुचित दृष्टि के चलते सिर्फ अपने ही बारे में अपने परिवार ,जाति और समुदाय के बारे में सोचने की प्रवृत्ति विकसित कर चुके हैं परिणामस्वरूप, वह दिन दूर नहीं है जब हमारी बची-खुची एकता और सामंजस्य को बचाने का कोई उपाय हमारे पास बचेगा। ऐसे में प्रश्न उपस्थित होता है कि मनुष्य समाज को अपने भविष्य अर्थात राष्ट्र धर्म संस्कृति में प्रसार पा रही संकुचित जीवन दृष्टि के उत्पत्ति स्थल को खोज कर मानवीय सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक जीवन में शुचिता स्थापित करने की प्रेरणा अपने अंतर से किस प्रकार और कब जागृत होगी।

यह सत्य है जीवन की भौतिक सुविधाओं के साथ प्रतिष्ठा और बराबरी की चाहत सभी सभ्यताओं में एक जैसी होती है जैसे जीवन के अर्थ की खोज की प्यास। वर्तमान दृश्य विकसित सभ्यता में जीवन का अर्थ देने वाली चाह, वह है जो एक सुंदर घर, सुंदर स्त्री पति और बच्चों के संबंध में होती है। अपनी इच्छा पूर्ति के लिए व्यक्ति को किस स्तर तक जाना चाहिए यह उसने सोचना ही छोड़ दिया है। उसके कृत्य से क्या किसी का कोई नुकसान हो रहा है इसकी आज के व्यक्ति को चिंता ही नहीं है। आज यह मान लिया गया है कि भूमंडलीकरण के युग में आर्थिक आधार पर सभी में मैत्री और प्रेम स्थापित हो जाएगा। समाज राष्ट्रीय स्तर पर एक सामाजिक और आर्थिक समानता की ओर विकसित हो रहा है, यह भी मान लिया गया प्रतीत होता है। दूसरी ओर यह भी माना जा रहा है कि वर्तमान भूमंडलीकरण और तकनीकी विकास के दौर में व्यक्ति सामूहिक मानव मशीन के छोटे पुर्जे से अधिक कुछ नहीं रह गया है। मनुष्य को आर्थिक समानता की प्यास ने इतना प्यासा बना दिया है कि वह स्वयं के जीवन में सांस्कृतिक आध्यात्मिक समानता की बात ही भूल गया है। अब मनुष्य द्वारा विकसित यह सभ्यता अपने ही विरोधाभासों से धड़ धड़ाकर गिर रही है। सामाजिक आर्थिक विषमताओं की भयानक बुराइयों ने सभ्यताओं को नष्ट भ्रष्ट कर दिया है। इतिहास इसका साक्षी है। जब-जब भी सभ्यता में यह बुराई चरम तक पहुंची है तब तब वह बिखर कर नष्ट हो गई है। अखंड भारत में फैली गुर्जर जाति लोक संस्कृति का यदि पुनर्जागरण होता है और गुर्जर जाति एक संगठन सूत्र में बंधती है तो निश्चय ही गुर्जरों के द्वारा भारत राष्ट्र की मूलभूत एकता के बीजारोपण में आशा की किरण दिखाई देती है। अखंड भारत गुर्जर महासभा द्वारा गुर्जर लोक संस्कृति पुनर्जागरण का शंखनाद भगवान श्री देवनारायण को आदर्श मानकर किया जा चुका है। गुर्जर जाति का इतिहास बताता है कि गुर्जर

अखंड भारत स्वराज्य पोशक गुर्जर लोक संस्कृति पुनर्जागरण, भारत की मूलभूत एकता को जनमानस के दृष्टि पथ में लाने का सार्थक प्रयास वर्तमान भूमंडलीय सभ्यता और संस्कृति की मूलभूत आवश्यकता है। गुर्जर लोक संस्कृति पुनर्जागरण से अभिप्राय प्राचीन जीवन मूल्यों का परिवर्तित परिस्थितियों में समन्वयात्मक पुर्नस्थापन है। दूसरे अर्थ में किसी भी जाति समाज की विकासशील अवस्था में दीर्घकाल के बाद पुनः उन्नति की ओर बढ़ने की अवस्था का नाम ही पुनर्जागरण है। गुर्जर लोक संस्कृति पुनर्जागरण के उद्घोषक श्री देवनारायण ने 1100 वर्ष पूर्व गुर्जर लोक संस्कृति पुनर्जागरण का स्वयं प्रेरित शंखनाद का प्रारंभ बौद्धिकता, कलात्मकता तथा नैतिकता एवं आध्यात्मिकता प्रेरित संदेश, गुर्जर आदि तीर्थ नागपहाड़ पुष्कर धाम पर दिया था। अखंड भारत गुर्जर महासभा द्वारा उसी का पुनर्जागरण प्रारंभ किया गया है।

अखंड भारत गुर्जरत्रा लोक संस्कृति पुनर्जागरण

अखंड भारत गुर्जरत्रा लोक संस्कृति पुनर्जागरण से अभिप्राय मानव मात्र में सुप्त ईश्वर पर आस्था, प्रेम, करुणा, सत्य, विनम्रता, ईमानदारी और सेवा भावना आदि नैतिक गुणों और सत्य ज्ञान के जागरण तथा समावेश के बल पर मानव चरित्र निर्माण है। सत्य, निष्ठा, विश्वास और इमानदारी हमारे युवाओं को भयहीन बनाती है। इससे सभी प्रकार की दुःशंकाओं के साथ ही भविष्य की दुःसंभावनाओं का भय खत्म होता है। सही अर्थों में हम मनुष्य बन कर जीवन पथ पर आगे बढ़े एवं निर्भीक होकर अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे। इससे उनमें न केवल जीवन के प्रति उत्साह बढ़ेगा बल्कि वे अपने पूर्वजों के अखंड भारत स्वराज्य पोषक सांस्कृतिक गुणों को अपने में पुनः प्रतिष्ठित करने में सक्षम हो सकेंगे। हमें हमारे पूर्वजों के वैभव को पुर्नस्थापित करने के लिए अपनी गुर्जरत्रा मातृ भूमि की सांस्कृतिक आध्यात्मिक विरासत में डूब कर वे मोती निकालकर लाने होंगे जो वैदिक काल से सनातनधर्मी सभी धर्मों यथा हिंदू, जैन, सिख, बौद्ध आदि के संतों एवं महात्माओं ने हमें दिए थे। उन्होंने हमें प्रेम, सत्य, भाईचारा, मानवता, सेवा भावना और विनम्रता का संदेश दिया है। हमारे विद्यार्थी और युवा मातृभूमि और संपूर्ण विश्व के भविष्य हैं।

अखंड भारत स्वराज्य पोषक भारत सदियों से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक सांस्कृतिक कारणों से खंड खंड होते-होते आजादी के पूर्व रहा सहा भारत का संयुक्त स्वरूप भी आज बंटा हुआ है। एक देश के बजाय लाखों लोगों की लाशों पर तीन देश बने हुए हैं। आखिर क्यों ? इस प्रश्न का उत्तर हम में से प्रत्येक भारतीय को खोजने की वर्तमान में प्रबल आवश्यकता है। आखिर क्यों का उत्तर है! इसका कारण सदियों की गुलामी के भय से त्रस्त हमारे लोकमानस में बस गया है। निरंतर आक्रमण को सहते सहते व्यक्ति जब स्वयं अपनी जाति, भाषा, प्रांत और समुदाय को देश से ऊपर समझकर संकीर्ण स्वार्थपरतायुक्त पूर्वाग्रहों से परिचालित होने लगता है तब परस्पर अविश्वास घृणा और हिंसा का अराजक वातावरण निर्मित हो जाता है।

विदेशी आक्रांता उनसे अपनी सुरक्षा के लिए भारतवासियों ने जिस जाति रूपी दुर्ग का निर्माण किया था आगे चलकर हमारे भीतर से ही अपने द्वारा निर्मित सामाजिक प्रथाओं के प्रति उठे सवालों ने हमारे अपने सामूहिक स्वरूप को जहां विस्मृति में धकेलने का कार्य किया, वहीं विदेशी आक्रांताओं ने हमें जाति के नाम पर अलग-अलग बंटा हुआ समझकर हममें और ज्यादा भेदभाव उत्पन्न कर दिए। आर्थिक विषमता, सामाजिक पिछड़ेपन, आरक्षण व्यवस्था, भ्रष्टाचार और राजनीतिक तुष्टीकरण की नीति वर्तमान भारतीय लोकतंत्र में सामाजिक सामंजस्य को नष्ट करने की दिशा में आग में घी डालने का कार्य कर रही है। इस सब के बावजूद भी वर्तमान भारत की राजनीतिक आर्थिक एवं सामाजिक विकास की आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ भारत देश का वह मजबूत चरित्र कौन बनाएगा, जिसके बिना कोई भी प्रगति ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकती है। इसके लिए हमें हमारी गुर्जरत्रा लोक संस्कृति की सांस्कृतिक विरासत का पुनरावलोकन करने की आवश्यकता है।

संस्कृति के विद्वानों के अनुसार संस्कृति ऐसी चीज है जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते हैं किंतु उसकी परिभाषा नहीं दे सकते। कुछ अंशों में बह सभ्यता से भिन्न गुण है। अंग्रेजी में एक कहावत है सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, संस्कृति वह गुण है जो हम में व्याप्त है। सभ्यता और संस्कृति दोनों एक दूसरे को प्रभावित करती है। संस्कृति और प्रकृति में भी भेद है। गुस्सा करना मनुष्य की प्रकृति है, लोभ

में पढ़ना उसका स्वभाव है, ईर्ष्या, मोह, राग, द्वेष और कामवासना यह सब प्रकृति प्रदत्त गुण हैं। मगर प्रकृति के ये गुणअगर बेरोक-टोक छोड़ दिए जाएं तो आदमी और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाए। इसलिए मनुष्य प्रकृति के इन आवेशों पर रोक लगाता है और कोशिश करता है वह गुस्से के बस में नहीं बल्कि गुस्सा ही उसके वश में रहे, वह लोभ, मोहवशी और कामवासना का गुलाम नहीं, बल्कि वह दुर्गुण ही उसके गुलाम रहे और इन दोनों पर आदमी जितना विजयी होता है उसकी संस्कृति भी उतनी ही उन्नत समझी जाती है। गुर्जरत्रा लोक संस्कृति से तात्पर्य दस बीस सौ 50 वर्ष नहीं बल्कि अनेक शताब्दियों से गुर्जर समाज के लोगों ने जिस प्रकार खान पान, रहन-सहन, पढ़ना-लिखना, सोचना-समझना और राजकाज चलाना अथवा धर्म-कर्म करते रहे हैं उन सभी कार्यों से उनकी संस्कृति विकसित हुई है।

संस्कृति उस समाज का जीने का एक तरीका है, जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसीलिए जिस समाज में हम पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज से मिलकर हम जी रहे हैं उसकी संस्कृति हमारी अपनी संस्कृति है, यद्यपि अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा करते हैं वह भी हमारी संस्कृति का अंग बन जाता है और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी संतानों के लिए छोड़ जाते हैं। संस्कृति हमारा पीछा जन्म जन्मांतर तक करती है। यह बात अन्य सब धर्म संप्रदायों में दीक्षित हुए गुर्जरों के लोक सांस्कृतिक जीवन मूल्यों से व्यक्त होती है। यह भी कहा जाता है जिसका जैसा संस्कार है उसका वैसा ही पुनर्जन्म भी होता है। दृश्य संसार में जितने भी कला प्रतीक हैं उनकी जिन्होंने रचना की है वह हमारी संस्कृति के निर्माता हैं। संस्कृति के उपकरण हमारे पुस्तकालय और संग्रहालय प्राचीन स्मारक, नाट्यशाला और सिनेमा घर ही नहीं बल्कि हमारे राजनीतिक व आर्थिक संगठन भी होते हैं क्योंकि उन पर भी हमारी रुचि और चरित्र की छाप लगी होती है।

संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है जहां तक आज हमारी पहचान गुर्जर जाति के रूप में है यह सर्वविदित है कि जब भी दो जातियां आपस में मिलती है उनके संपर्क तथा संघर्ष से जिंदगी की एक नई धारा फूट निकलती है जिसका प्रभाव दोनों पर पड़ता है।आदान प्रदान की प्रक्रिया संस्कृति की जान है और इसी के सहारे वह अपने को जिंदा रखती है। सांस्कृतिक संपर्क का प्रभाव रहन-सहन आचार-विचार और धर्म, दर्शन साहित्य और कला पर भी पड़ता है। इतिहास साक्षी है कि हम वर्तमान में एशिया महाद्वीप के विभिन्न भागों में सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि से जाति उपजाति और संप्रदाय धर्मों में अपनी गुर्जर पहचान बनाए हुए हैं। इस दृष्टि से गुर्जर लोक संस्कृति महान संस्कृति है जिसने विश्व के अधिक शक्तिशाली और महान देशों में अधिक से अधिक जातियों की संस्कृतियों को अपने भीतर जज्ब करके उन्हें बचा कर के बड़े से बड़े समन्वयको उत्पन्न किया है।

वर्तमान भारत के राजनैतिक परिदृश्य में भारतीय लोकतंत्र में आजादी से पूर्व तथा आजादी के पश्चात गुर्जरों ने एक सतत संघर्षशील जाति के रूप में अपनी पहचान को स्थापित किया है। भारतीय इतिहास में लिखित अलिखित रूप से दर्ज है कि स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात अपने सामाजिक आर्थिक पिछड़ेपन से मुक्ति के लिए गुर्जरों ने संघर्ष किया है और कर रहे हैं। तथाकथित इतिहासकारों द्वारा राजनीतिक शक्तियों के प्रभाव में यह प्रयास किए गए हैं कि कहीं गुर्जरों को अपना कौटुंबिक कबीलाई स्वरूप स्मृति में ना आ जाए, इसलिए उन्होंने गुर्जर इतिहास को छुपाने और विकृत करने का प्रयास किया है। गुर्जरों के कबीलाई स्वरूप से ही परिवार, कुटुंब के रूप में विकसित होकर, समाज संगठन के बल पर एक दूसरे को अनुप्राणित करते-करते अंत में गुर्जर देश की स्थापना की है। इसका उल्लेख इतिहास में भरा पड़ा है।

गुर्जरों के नाम से विभिन्न नगरों और क्षेत्रों के नाम तथा गुर्जर देश, गुर्जरत्रा, गुर्जरों के संगठन और विघटन के प्रमाण हैं। गुण, कर्म, रोजी-रोटी, आत्मरक्षा पारस्परिक सहयोग की भावना समाज जीवन में बहुत सी बातें ऐसी होती है जो सामाजिक सामुदायिक सांस्कृतिक संगठनों को जोड़कर रखने में सहायक होती है। इतिहास साक्षी है कि गुर्जर कुषाण, शक, हूण, आर्य, प्रतिहार तथा अनेक नामों से संबोधित समूह कबीले अथवा जाति समूह गुर्जर जातीय संस्कृति के अंग हैं। एशिया महाद्वीप, जम्बूद्वीप, अजनाभ खंड, भारतवर्ष हिंदुस्तान का भौगोलिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास गुर्जरों के सामाजिक सांस्कृतिक उत्थान पतन का साक्षी है। अखंड भारत गुर्जर महासभा ने गुर्जरत्रा लोक संस्कृति पुनर्जागरण अभियान इसी दृष्टि से प्रारम्भ किया है कि हमारी आने वाली पीढ़ी अखंड भारतभूमि में अपने पूर्वजों के गौरव को पुर्नस्थापित करने में सक्षम हो सके।

अपने पूर्वजों के पद चिन्हों पर समाज सेवा में अग्रणी

सेवानिवृत्त डी.वाई. एसपी. राजवीर सिंह कसाना एवं गुर्जर समाज में शैक्षणिक जागृति एवं समाज सेवा का अलख जगाने वाले स्वर्गीय चौधरी धनपाल सिंह कसाना का परिवार

गुर्जर समाज के मूर्धन्य व्यक्ति स्वर्गीय चौधरी धनपाल सिंह कसाना जिन्होंने तत्कालीन समय के मेरठ जिले में गुर्जर समाज में व्याप्त अशिक्षा से व्यथित होकर शैक्षणिक जागरण का कार्य किया। वर्तमान गाजियाबाद जिले के ग्राम शरीफाबाद राजपुर तहसील लोनी जिला गाजियाबाद उत्तर प्रदेश में उनके द्वारा प्रारम्भ शिक्षा व समाज सेवा कार्य में योगदान को आज भी गुर्जर समाज भूला नहीं पाया है।

समाजसेवी व्यक्तित्व के धनी रिटायर्ड डीवाईएसपी राजवीर सिंह कसाना अपने दादा चौधरी धनपाल सिंह पुत्र चौधरी श्री दलेल सिंह के प्रपोत्र हैं। इनके दादा चौधरी धनपाल सिंह ब्रिटिश राज्य के समय जिला बोर्ड मेरठ के सदस्य रहे हैं। उस समय जिला बोर्ड की सदस्यता वर्तमान समय के विधायक के समकक्ष रही है। गुर्जर समाज में व्याप्त अशिक्षा तथा उनके गांव राजपुर से 30 - 40 कोस के क्षेत्र में कोई शिक्षा का केंद्र नहीं होने से व्यथित थे। उन्होंने तत्कालीन समय में खुशीराम शर्मा जिला बोर्ड के अध्यक्ष से अपनी निकटता के चलते वर्ष 1935 में किरोड़ी गांव में मिडिल स्कूल की स्थापना करवाई। अपने प्रयासों के चलते चौधरी धनपाल सिंह कसाना ने किरोड़ी में स्थापित मिडिल स्कूल को 1946 में इंटर कॉलेज के रूप में क्रमोन्नत करवाया जिसका प्रबंधन आज भी उनके परिवार के पास है। विद्यालय में गरीब बच्चों की फीस माफ करके आज भी पढ़ाया जाता है। यही नहीं स्व. चौधरी धनपाल सिंह ने अपने गांव शरीफाबाद राजपुर में खुद के घर में 10 वर्ष तक प्राइमरी विद्यालय चलाया, जिसको 1952 53 में प्रारंभ करने के पश्चात उनके परिवार द्वारा खुद की खातेदारी में से दो बीघा जमीन दान की गई जिस पर राजकीय विद्यालय आज भी चल रहा है। विद्यालय लोनी ब्लॉक तहसील जिला गाजियाबाद उत्तर प्रदेश में राजकीय विद्यालय राजपुर के नाम से चल रहा है।

स्वर्गीय चौधरी धनपाल सिंह के पुत्र सुखबीर सिंह कसाना के चार पुत्र जिनमें विजेंद्र सिंह, जगदीश सिंह, सुरेंद्र सिंह एडवोकेट, योगेंद्र सिंह, विजेंद्र सिंह के पुत्र राजेंद्र सिंह एडवोकेट एवं परमेंद्र सिंह शिक्षक का कार्य कर रहे हैं। जगदीश सिंह के पुत्र अशोक दिल्ली में शिक्षक टीचर्स यूनियन के सेक्रेटरी भी रहे हैं। सुखबीर सिंह के पुत्र सुरेंद्र सिंह एडवोकेट के पुत्र रोहित कसाना अध्यापक हैं। अन्य पुत्र मोहित सिंह कस्टम विभाग में सुपरिंटेंडेंट के पद पर कार्यरत हैं। चौधरी धनपाल सिंह जी के पुत्र लक्ष्मी चंद ना औलाद रहे। एडवोकेट योगेंद्र सिंह के पुत्र अमित एडवोकेट हैं तथा सुनील इंजिनियर के पद

पर कार्य कर रहे हैं। उनकी पुत्री आंचल कसाना रायपुर में जज के पद पर कार्यरत हैं।

विशम्भर सिंह कसाना की पुत्री कस्तूरी देवी। चौधरी धनपाल सिंह के पुत्र राजा राम सिंह के दो पुत्र हैं राजवीर सिंह कसाना रिटायर्ड डीवाईएसपी एवं विक्रम सिंह रिटायर्ड शिक्षक। राजवीर सिंह कसाना के पुत्र रजनीश एवं मनीष अपने पिता

द्वारा स्थापित व्यवसाय को कर रहे हैं। विक्रम सिंह सेवानिवृत्त शिक्षक के पुत्र डॉ. रवीश वेटरनरी चिकित्सक के पद पर कार्यरत हैं। कविश दिल्ली में एडवोकेट हैं। अन्य पुत्र शिवम एमटेक मैं अध्यनरत है। चौधरी धनपाल सिंह के पुत्र प्रीतम सिंह के दो पुत्र जयकीरत सिंह एवं कुशल पाल सिंह हैं। जिनके पुत्र अंकुर लोनी में एडवोकेट तथा अंकित शिक्षक हैं। जयकीरत सिंह कसाना के पुत्र सचिन दिल्ली में शिक्षक तथा स्वयं का व्यापार कर रहे हैं।

समाजसेवी रिटायर्ड डीवाईएसपी राजवीर सिंह का विवाह श्रीमती माया देवी के साथ दनकौर स्टेशन के पास सरकपुर गांव में संपन्न हुआ है। राजवीर सिंह कसाना ने वर्ष 1965 में ग्रेजुएशन पास किया तत्पश्चात 1966 में पुलिस सेवा में भर्ती होकर सीधे सब इंस्पेक्टर बने, उन्होंने प्रथम नियुक्ति लखनऊ में लेकर पुलिस विभाग में अपनी सेवाएं प्रदान की। अपने पुलिस सेवा काल में वे देहरादून, सहारनपुर, मेरठ, आगरा, बिजनौर में पदस्थ रहे। सन 1998 में उन्हें पदोन्नति देकर डिवाय एस.पी. बनाया गया।

डी.वाई.एसपी. के पद पर उन्होंने बरेली, बिजनौर, बदायूं, लखनऊ तथा मेरठ में अपनी सेवाएं दी। मेरठ से वर्ष 2002 में राजवीर सिंह कसाना सेवानिवृत हुए।

डीवाईएसपी के पद से सेवा निवृत होने के पश्चात उन्होंने स्वयं का होटल व्यवसाय प्रारंभ किया जिसे आज उनके पुत्र व्यवस्थित रूप से क्रमोन्नत कर रहे हैं। राजवीर सिंह कसाना ने अपने दादा चौधरी धनपाल सिंह की स्मृति में फरुखनगर आसलपुर गांव में प्रवेश द्वार निर्मित करवाया। इसके पश्चात उन्होंने अपने गांव शरीफाबाद राजपुर में खुद की खातेदारी जमीन में अपने दादाजी चौधरी धनपाल सिंह की स्मृति में एक स्मृति भवन का निर्माण करवाया है। जहां शादी विवाह समारोह संपन्न होते हैं जिसमें सभी गांव परिवार और रिश्तेदार सम्मिलित होते हैं। राजवीर सिंह कसाना सेवानिवृत्ति के पश्चात निरंतर समाज सेवा कार्य तथा समाज में राजनीतिक चेतना के लिए कार्य कर रहे हैं।

राजवीर सिंह कसाना के चाचा प्रीतम सिंह ग्राम प्रधान रहे हैं। उनके चाचा जी ब्लॉक प्रमुख तथा 1988 से 1995 तक राजवीर सिंह के भाई विक्रम सिंह ग्राम प्रधान रहे हैं। विक्रम सिंह वर्तमान समय में भी राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय हैं।

राजवीर सिंह कसाना के दादा स्वर्गीय चौधरी धनपाल सिंह द्वारा समाज में शैक्षणिक जागृति के परिणाम स्वरूप उनके परिवार के सदस्यों में अधिकांश सदस्य राजकीय सेवा में होने के कारण अब शहरों में बस गए हैं। इनके दो भाई घर पर खेती-बाड़ी संभालते हैं। अभी हाल ही में गांधी जयंती के अवसर पर राजवीर सिंह कसाना ने गुर्जर इतिहास को संरक्षण प्रदान करने की दृष्टि से गुर्जर समाज का सम्मेलन एवं विचार संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इतिहास बचाओ स्वाभिमान बचाओ संगोष्ठी के लिए आयोजित कार्यक्रम में इन्होंने अपना बैंक्विट हॉल जो भोपरा स्थित कोयल एंक्लेव में है। इसी स्थान पर संगोष्ठी का आयोजन संपन्न हुआ इसमें पूरी व्यवस्था व अल्पाहार आदि की व्यवस्था उनके स्वयं के निजी खर्चे से की गई है। उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त अन्य स्थानों से आने वाले प्रतिनिधि अतिथियों को इनके वजीराबाद रोड स्थित आशीर्वाद होटल में आवास व खानपान की व्यवस्था उपलब्ध करवाई गई है।

सेवानिवृत्ति राजवीर सिंह कसाना डिवाइसपी के उज्जवल भविष्य की गुर्जर समाज एवं देव चेतना परिवार कामना करता है।

दीपिका अधाना बनी एयर इण्डिया में कॉमर्शियल पायलट

एयर इंडिया में बतौर कमर्शियल पायलट नियुक्त होने पर तिगांव विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक ललित नागर हरियाणा गुर्जर महासभा के पदाधिकारियों के साथ गांव तिगांव की बेटी दीपिका अधाना के निवास पहुंचे और उन्हें उनकी उपलब्धि पर बधाई देते हुए उनका जोरदार स्वागत किया।

इस दौरान श्री नागर ने फूलों का बुक्के भेंटकर दीपिका को पायलट बनने पर शुभकामनाएं दी वहीं उनके परिवार को भी अपनी बेटी को इस मुकाम पर पहुंचाने के लिए उनकी जमकर प्रशंसा की। इस मौके पर पूर्व विधायक ललित नागर ने कहा कि दीपिका ने यह उपलब्धि हासिल करके न केवल तिगांव बल्कि फरीदाबाद का नाम राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात किया है और पूरे तिगांव सहित फरीदाबाद के लोगों को इस बेटी पर नाज है। उन्होंने कहा कि इरादे अगर प्रबल हों तो हर लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है और ऐसा ही कुछ कर दिखाया है दीपिका ने। जिन्होंने अपनी मेहनत की बदौलत पायलट तक का सफर तय किया और आज पूरे क्षेत्र को इस बेटी की उपलब्धि पर नाज है। पूर्व विधायक ललित नागर सहित हरियाणा गुर्जर महासभा के पदाधिकारियों ने दीपिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए उनके परिजनों को अपनी बेटी को इस लायक बनाने के लिए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस अवसर पर हरियाणा गुर्जर महासभा के अध्यक्ष चौ. जगबीर नागर, रणवीर सिंह चंदीला, रामफूल सिंह भाटी, धर्मपाल खटाना एडवोकेट, सुमेश चंदीला, सत्येंद्र फागना, हंसराज कपासिया, निरंजर नागर, देशराज बिधूड़ी, गोविंद रामगढ़, दीपक ठाकुर, महेंद्र ठाकुर, संजय नंबरदार, मनोज गुप्ता, रमेश, रणवीर सिंह, चौधरी लीलेराम नागर, सतेंद्र नागर आदि समाज के गणमान्य लोग मौजूद थे। गौरतलब है कि दीपिका ने फरीदाबाद कान्वेंट स्कूल से दसवीं की परीक्षा पास की थी, जबकि टैगोर एकेडमी पब्लिक स्कूल से 12वीं पास की थी।

गौ सेवा को समर्पित व्यक्तित्व के धनी तिलक राज बैंसला

श्री गोपाल गौशाला ग्राम मेवला महाराजपुर फरीदाबाद के महामंत्री

फरीदाबाद के गांव मेवला महाराजपुर में श्री गोपाल गौशाला वर्तमान में विश्व हिंदू परिषद द्वारा संचालित है। गौशाला के महामंत्री तिलकराज बैंसला ने बताया कि वर्ष 1990 में कसाइयों द्वारा गोवंश को कत्ल करने के लिए ले जाया जा रहा था। हिंदू धर्मावलंबी जन समाज द्वारा गोधन को मेवला महाराजपुर में कसाइयों से मुक्त करवाया गया। मुक्त करवाने के पश्चात तिलक राज बैंसला के द्वारा अपनी निजी खातेदारी भूमि पर गोधन के पालन-पोषण और संरक्षण की व्यवस्था की गई। तिलक राज बैंसला प्रारंभ से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक रहे हैं, लंबे समय से बजरंग दल में उन्होंने समाज सेवा के कार्य किए हैं।

अपनी निजी खातेदारी पर प्रारंभ गौशाला को उन्होंने बाद में विश्व हिंदू परिषद के माध्यम से एक विशाल गौशाला का रूप प्रदान किया। मेवला महाराजपुर के ग्रामीण समाज एवं विश्व हिंदू परिषद द्वारा श्री गोपाल गौशाला के नाम से संस्था पंजीकृत करवाई और पूरा समाज गौशाला के विकास कार्य में जुड़ गया।

वर्तमान समय में गौशाला में 1800 गोधन है। गोधन की सेवा सुश्रुषा एवं एवं पालन-पोषण के लिए लगभग 50 गौ सेवक कार्य कर रहे हैं। तिलक राज बैंसला श्री गोपाल गौशाला के महामंत्री पद का दायित्व निर्वाह कर रहे हैं, उनके साथ रमेश कुमार गुप्ता अध्यक्ष एवं दाऊ दयाल गर्ग कोषाध्यक्ष भी गोधन के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए अपना अमूल्य समय दे रहे हैं।

वर्तमान समय में गौशाला में गायों के पालन-पोषण के लिए अलग-अलग बाड़े बने हुए हैं, यहां गायों को हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है। बीमार गायों का बाड़ा अलग है, अंधी गायों का बाड़ा अलग से बना हुआ है, सांड और बछड़ों के लिए अलग से बाड़े बने हुए हैं।

गौशाला परिसर के अंदर श्री शनि देव मंदिर द्वार

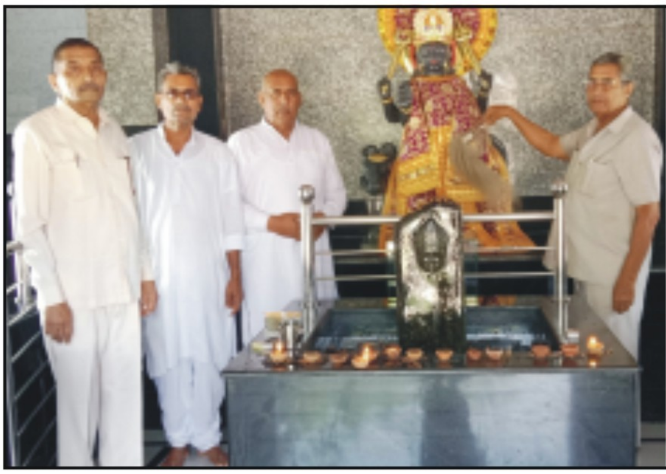

में प्रवेश करते ही नजर आने लगता है। गौशाला के दाएं और गौशाला का कार्यालय है। गौशाला परिसर में भगवान श्री राधाकृष्ण एवं महाकाल के मंदिर बने हुए हैं जिनमें

नियमित रूप से पूजा-अर्चना होती है। गौशाला में खरगोश और पक्षियों के पालन-पोषण के लिए भी अलग से क्षेत्र विकसित किये गये हैं।

वर्तमान समय में छुट्टी के दिन श्रद्धालुओं का गौशाला में गौ सेवा एवं धार्मिक स्थल के दर्शन करने के लिए तांता लगा हुआ रहता है। गौशाला में एक स्थान पर तुलादान की व्यवस्था भी है वहां श्रद्धालु अपने वजन के बराबर चारा या पशु आहार तुलवाकर गायों के लिए देते हैं। शाला में श्रद्धालु व भक्तों का आवाजाही बनी रहती है। गौशाला द्वारा गोमूत्र एवं गोबर से भी औषधियाँ तैयार करने के साथ-साथ अन्य उत्पाद भी तैयार किए जाते हैं। गौशाला में तैयार उत्पादों की विक्रय के लिए विक्रय केंद्र और एक औषधालय भी संचालित किया जा रहा है जहाँ नियमित रूप से वैद्यजी बैठते हैं। दुधारू पशुओं के लिए अलग से व्यवस्था है। प्रत्येक माह में गोधन के ऊपर एक लाख से अधिक रुपए व्यय किये जाते हैं।

गौशाला द्वारा अपने उत्पादों की बिक्री से गौ सेवा एवं श्री गोपाल गौशाला के विकास के कार्य संचालित किये जा रहे हैं। मेवला महाराजपुर में गौशाला का अवलोकन समाजसेवी हंसराज कपासिया, देशराज बिधूड़ी, गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय महासचिव शैतान सिंह गुर्जर एवं श्री गोपाल गौशाला के महामंत्री तिलक राज जी बैंसला के साथ में संपूर्ण रूप से गौशाला में चल रही गतिविधियों का अवलोकन करने का अवसर प्राप्त हुआ।

गौशाला के महासचिव तिलक राज बैंसला विश्व हिंदू परिषद् हरियाणा प्रदेश में प्रदेश उपाध्यक्ष का दायित्व भी निर्वाह कर रहे हैं। बैंसला के साथ में मंदिर के पुजारी, कर्मचारी एवं औषधालय में उपस्थित वैद्यजी एवं अन्य सहयोगियों के साथ भी चर्चा पश्चात उनके सेवाभाव को देखकर मन गद्‌गद् हो उठा। तिलक राज बैंसला के साथ मेवला महाराजपुर में

उनके द्वारा निर्मित हनुमान जी, माता दुर्गा एवं भगवान शिव तथा शनिश्चर देव के मंदिर में दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तिलकराज बैंसला के अग्रज चौधरी कर्नल देवेंद्र सिंह से भी सेवानिवृत्ति पश्चात उनके द्वारा

समाज के जरूरतमंद विद्यार्थियों का सहयोग करने एवं सेवा से निवृत सैनिक परिवारों के हित में किए जा रहे कार्यों की भी जानकारी प्राप्त हुई।

फरीदाबाद प्रवास के दौरान गुर्जर भवन फरीदाबाद के प्रधान जगवीर सिंह नागर, संचालन समिति के महामंत्री एवं पूर्व कोषाध्यक्ष हंसराज कपासिया, तिलकराज बैंसला, रामफूल सिंह भाटी, देशराज विधूड़ी एवं समाज के गणमान्य पदाधिकारियों से भी सामाजिक विकास के मुद्दों पर चर्चा एवं समाज हित में किये जा रहे कार्यों की जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिला। गुर्जर भवन संचालन समिति द्वारा समाज हित में बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध करवाने का स्तुत्य कार्य किया जा रहा है।

गौ सेवा को समर्पित व्यक्तित्व के धनी तिलक राज बैंसला द्वारा किए जा रहे प्रत्येक समाज सेवा कार्य जिनमें उनके परिवार का पूर्ण सहयोग रहता है, निश्चय ही प्रशंसनीय एवं प्रेरणास्पद है।

राकेश छोकर को संयुक्त राष्ट्र उप महासचिव का धन्यवाद पत्र

एसडीजी एक्शन जोन 2023 में चैंपियन, सहयोगी के रूप में किया था प्रतिभाग

नई दिल्ली। संयुक्त राष्ट्र उप महासचिव अमीना जे. मोहम्मद की ओर से जारी संदेश द्वारा अंतरराष्ट्रीय विभूति राकेश छोकर को एसडीजी एक्शन जोन-2023 में चैंपियन, सहयोगी के रूप में प्रतिभाग किये जाने के बाद धन्यवाद प्रेषित किया गया है। उनकी भूमिका को भी सराहा है। उन्होंने संदेश में कहा है कि पिछले सप्ताह एसडीजी एक्शन जोन 2023 में हमारे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद!

हमें उम्मीद है कि आपकी प्रतिभागिता के साथ बातचीत प्रेरणादायक रहीं और यह प्रेरणा सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) पर कार्रवाई में बदल जाएगी। उन्होंने आशा जताई कि मूल में, जवाबदेही केवल वही करना है जो दुनिया को वास्तव में नेतृत्व, त्वरित कार्रवाई और जवाबदेही की आवश्यकता है। हमें उन लोगों की जरूरत है कि जो वही करें जो उन्होंने कहा है कि वे करेंगे।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि आप जैसे लोगों का काम, जिन्होंने एसडीजी के वादे को आगे बढ़ाने के लिए काम किया है और दूसरों को सशक्त बनाया है, 2030 की समय सीमा के करीब पहुंचने तक अंतर पैदा करना जारी रखेंगे। हम इस संकल्प के साथ आ रहे हैं कि हम लक्ष्य पूरा करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

श्री छोकर ने एसडीजी एक्शन जोन के निरंतर तीसरे संस्करण में वर्चुअल रूप से प्रतिभागिता की थी। वैश्विक स्तर पर उनकी सहभागिता से प्रशंसकों में अपार हर्ष हैं।

वरिष्ठ नागरिकों को मार डालो...

सांसद श्रीमती जया बच्चन वरिष्ठ नागरिकों के प्रति संवेदनशील

सांसद जया बच्चन ने कहा– भारत सरकार को 65 वर्ष की आयु के बाद सभी वरिष्ठ नागरिकों को मार देना चाहिए क्योंकि सरकार इन राष्ट्र निर्माताओं पर ध्यान देने के लिए तैयार नहीं है। क्या भारत में वरिष्ठ नागरिक होना अपराध है?

भारत के वरिष्ठ नागरिक 70 वर्ष के बाद चिकित्सा बीमा के लिए पात्र नहीं हैं, उन्हें ईएमआई पर ऋण नहीं मिलता है। ड्राइविंग लाइसेंस जारी नहीं किया गया है। उन्हें कोई काम नहीं दिया जाता है, इसलिए वे जीवित रहने के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं। उन्होंने सेवानिवृत्ति की आयु यानी 60-65 वर्ष तक सभी करों, बीमा प्रीमियम का भुगतान किया था। अब सीनियर सिटीजन बनने के बाद भी उन्हें सारे टैक्स चुकाने होंगे। भारत में वरिष्ठ नागरिकों के लिए कोई योजना नहीं है। रेलवे/हवाई यात्रा पर मिलने वाली 50 प्रतिशत छूट भी बंद कर दी गई है।

तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि राजनीति में विधायक, सांसद या मंत्री पद पर बैठे वरिष्ठ नागरिकों को हर संभव लाभ दिया जाता है और उन्हें पेंशन भी मिलती है। मुझे यह समझ में नहीं आता कि अन्य सभी (कुछ सरकारी कर्मचारियों को छोड़कर) को समान सुविधाओं से क्यों वंचित रखा जाता है। सोचिए, अगर बच्चे उनकी परवाह नहीं करेंगे तो वे कहां जाएंगे। अगर देश के बुजुर्ग चुनाव में सरकार के खिलाफ जाएंगे तो इसका असर चुनाव नतीजों पर पड़ेगा, सरकार को इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।

वरिष्ठों के पास सरकार बदलने की शक्ति है, उन्हें नजरअंदाज न करें। उनके पास सरकार बदलने का जीवनभर का अनुभव है। उन्हें कमजोर मत समझो! वरिष्ठजनों के लाभ के लिए बहुत सारी योजनाओं की आवश्यकता है। सरकार कल्याणकारी योजनाओं पर बहुत पैसा खर्च करती है, लेकिन वरिष्ठ नागरिकों के बारे में कभी नहीं सोचती है। इसके विपरीत, बैंकों की ब्याज दरों में कमी के कारण वरिष्ठ नागरिकों की आय घट रही है। यदि उनमें से कुछ को परिवार और स्वयं का समर्थन करने के लिए अल्प पेंशन मिल रही है, तो यह आयकर के अधीन भी है, इसलिए वरिष्ठ नागरिकों को कुछ लाभों के लिए विचार किया जाना चाहिए।

(1) 60 वर्ष से ऊपर के सभी नागरिकों को पेंशन दी जानी चाहिए (2) सभी को हैसियत के अनुसार पेंशन दी जानी चाहिए।

(3) रेलवे, बस और हवाई यात्रा में रियायत।

(4) अंतिम सांस तक सभी के लिए बीमा अनिवार्य होना चाहिए और प्रीमियम का भुगतान सरकार द्वारा किया जाना चाहिए।

(5) वरिष्ठ नागरिकों के अदालती मामलों को शीघ्र निर्णय के लिए प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

(6) हर शहर में सभी सुविधाओं के साथ वरिष्ठ नागरिकों के घर (7) सरकार को 10-15 साल पुरानी कारों को स्क्रेप करने के नियम में संशोधन करना चाहिए। यह नियम केवल वाणिज्यिक वाहनों के लिए लागू किया जाना चाहिए। हमारी कारें ऋण पर खरीदी जाती हैं और हमारे उपयोग में केवल 40 प्रतिशत आती है, 10 वर्षों में 50,000 किमी. तक चल पाती है। हमारी कारें नई जैसी ही अच्छी हैं। यदि हमारी गाड़ियाँ नष्ट हो जाती हैं तो हमें नई गाड़ियाँ दी जानी चाहिए।

सभी वरिष्ठ नागरिकों और युवाओं से इसे सभी सोशल मीडिया पर साझा करके वरिष्ठ नागरिकों को जागरूक करना चाहिए। वरिष्ठ नागरिक आशा करते हैं कि यह सरकार, जो हर समय ईमानदार है और 'सब का साथ, सब का विकास' की बात करती है, वरिष्ठ नागरिकों की भलाई के लिए कुछ करेगी, जिन्होंने योगदान दिया है राष्ट्र निर्माण में और अब अपने चरम पर हैं।

भगवान श्री देवनारायण की 37वीं ध्वज पदयात्रा जयपुर से देवधाम जोधपुरिया पहुँची

श्री देवनारायण देवधाम जोधपुरिया ध्वज पदयात्रा में गुर्जरों का उमड़ा जनसैलाब

जयपुर। मंदिर श्री देवनारायण जी पुरानी बस्ती जयपुर से 37वी धवज पदयात्रा के धवज की पूजन संत शिरोमणि श्री रामसेवकदास जी महाराज,भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष

श्री अंकित चेची,आरक्षण संघर्ष समिति के अध्यक्ष श्री विजय जी बैसला,श्री देवनारायण जन कल्याण संस्थान राजस्थान के संरक्षक मोहनलाल बागड़ी, महामंत्री श्री हरिनारायण मणकस, कोषाध्यक्ष श्री सुरेश चाड़, संयुक्त मंत्री श्री जीवन राम मावरी, जयपुर जिला अध्यक्ष श्री बाबूलाल सिन्धू, मंदिर श्री देवनारायण पुरानी बस्ती जयपुर के अध्यक्ष श्री गंगा राम चांदना एडवोकेट ने जयपुर के धवजधारक श्री ओमप्रकाश जागल के तिलक कर पदयात्रा शुरू करवाई।

गणगौरी बाजार में रैया परिवार,राजस्थान गुर्जर महासभा,फागण परिवार ने स्वागत किया। गोलाछा सिनेमा चौडा रास्ते में जयपुर नगर निगम हैरिटेज की महापौर श्रीमती मुनेश जी गुर्जर एवं ग्रेटर की महापौर श्रीमती सौम्या गुर्जर के साथ वार्ड के पार्षद श्री अमरसिंह जी गुर्जर द्वारा पदयात्रीयो का भव्य स्वागत कर देव प्रसादी का भी वितरण किया। स्वागत करताओ का श्री देवनारायण जन कल्याण संस्थान राजस्थान के अध्यक्ष श्री शंकरलाल कसाना एवं महामंत्री ने दुपट्टा एवं स्मृति चिन्ह भेट कर स्वागत किया गया।

दिल्ली, जयपुर, इंदौर और राजस्थान प्रदेश के कोने-कोने से श्री देवनारायण ध्वज पदयात्रा के झंडों और परंपरागत वेशभूषा में गुर्जर और गुजरिया श्री देवनारायण का जयकारा लगाते हुए 20 सितंबर को संध्या आरती के समय देव धाम जोधपुरिया पहुंचकर अपनी पदयात्रा को भगवान श्री देवनारायण के दर्शनों के साथ संपन्न करेंगे। लाखों की संख्या में उमंग और उत्साह के साथ दिल्ली से जोधपुरिया की सड़कों पर भगवान श्री देवनारायण की पचरंगी ध्वजाएं लहरा रही है। भगवान श्री देवनारायण के भजनों और गुर्जर लोक संस्कृति में प्रचलित परंपरागत लोकगीतों की धुन पर श्रद्धालु भक्त नाचते गाते अपने आराध्य भगवान श्री देवनारायण

के चरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए बढ़े जा रहे हैं। सड़कों पर गुर्जर और गुर्जरियो का उमंग और उत्साह के साथ गीत और नृत्य के साथ आगे बढ़ना अद्भुत दृश्य उपस्थित कर रहा है। दिल्ली राजस्थान और हरियाणा से आए

311 ध्वजों की भगवान श्री देवनारायण मंदिर पुरानी बस्ती जयपुर से शोभा यात्रा प्रारंभ हुई।

भगवान श्री देवनारायण के ध्वज एवं पद यात्रियों का जयपुर के गणगौरी बाजार में भारतीय जनता पार्टी जयपुर शहर मंत्री सुरेश गुर्जर, राजस्थान गुर्जर महासभा युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष रवि लोमोड़ के नेतृत्व में हजारों कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। स्वागत कर्ताओं द्वारा सभी ध्वज धारकों के तिलक लगाकर ऊपरणा भेंट किया गया, इस अवसर पर जयपुर ग्रेटर नगर निगम की मेयर सौम्या गुर्जर, जयपुर नगर निगम हेरिटेज की मेयर मुनेश गुर्जर, राजस्थान गुर्जर महासभा प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहनलाल वर्मा, गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति के विजय बैंसला, जयपुर शहर भाजपा अध्यक्ष राघव शर्मा, निगम पार्षदों एवं गुर्जर समाज के वरिष्ठ गणमान्य व्यक्तियों का साफा बंधवाकर स्वागत और सम्मान किया गया। पद यात्रियों को आइसक्रीम वितरित की गई। गुर्जर समाज सामूहिक विवाह आयोजन समिति द्वारा भी भगवान श्री देवनारायण के

ध्वजों एवं पद यात्रियों का समिति के अध्यक्ष गोविंद हांकला, महामंत्री रामेश्वर मणगस, कोषाध्यक्ष रामधन चेची, वरिष्ठ उपाध्यक्ष कन्हैया लाल छावडी एवं सैकड़ो कार्यकर्ताओं द्वारा स्वागत सत्कार तथा पदयात्रियों को गुलाब जामुन प्रसादी वितरित की गई।

अखिल भारतीय गुर्जर महासभा राजस्थान प्रदेश सामूहिक विवाह आयोजन समिति के अध्यक्ष रामस्वरूप सरधना, रामअवतार बड़िया सहित कार्यकर्ताओं ने श्री देवनारायण ध्वज पदयात्रा के ध्वजों की मंगल आरती की गई। गणगौरी बाजार, छोटी चौपड़, त्रिपोलिया बाजार, चौड़ा रास्ता, सांगानेरी गेट, आगरा रोड ट्रांसपोर्ट नगर खानियां बावड़ी एवं गोनेर रोड पर सैकड़ों जगह पदयात्रा का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। श्रद्धालुओं द्वारा स्थान स्थान पर पद यात्रियों के लिए जलपान एवं अल्पाहार की व्यवस्था की गई थी। पदयात्रा का सांयकाल भगवान श्री देवनारायण मंदिर गोनेर पहुंचने पर रात्रि विश्राम हुआ। दूसरे दिन 18 सितंबर को गोनेर से चाकसू पहुंचने पर चाकसू नगर में शोभायात्रा एवं रात्रि को भजन सत्संग के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। चाकसू से निवाई 19 सितंबर को विशाल श्री देवनारायण नाम लेवा जागरण एवं 20 सितंबर को निवाई में श्री देवनारायण ध्वज शोभायात्रा के पश्चात यात्रा देवधाम जोधपुरिया पहुंचकर संध्या आरती के समय सम्पन्न हुई। इस अवसर पर देव धाम जोधपुरिया में गुर्जर प्रतिभा सम्मान समारोह एवं विशाल धर्म सभा का आयोजन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय गुर्जर दिवस पर विशाल शोभायात्रा व वाहन रैली का आयोजन

अखिल भारतीय वीर गुर्जर महासभा की राजस्थान प्रदेश इकाई द्वारा 18 सितम्बर को महान गुर्जर सम्राट मिहिर भोज की जयन्ती के उपलक्ष्य में विशाल शोभायात्रा एवं वाहन रैली का आयोजन किया गया। मिहिरभोज की जयन्ती को अन्तर्राष्ट्रीय गुर्जर दिवस के रूप में मनाते हुए यह रैली भगवान देवनारायण मन्दिर, पुरानी बस्ती से चौगान होते हुए छोटी चौपड़, त्रिपोलिया बाजार, चौडा रास्ता, न्यू गेट, सांगानेरी गेट, घाटगेट, ट्रांसपोर्ट नगर से घाट की गुणी पर रैली का समापन किया गया। डीजे की धुन पर देवनारायण एवं मिहिरभोज के नारे लगाते हुए गुर्जर समाज के युवाओं ने इस रैली को सफल बनाया।

प्रदेश अध्यक्ष मनीष भरगढ़ ने रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। रैली को रवाना करने से पूर्व भरगढ़ ने गुर्जर समाज के पूर्वज मिहिरभोज के बारे में रैली में उपस्थित सभी युवाओं को बताया कि मिहिर भोज गुर्जर प्रतिहार राजवंश के महानतम सम्राटों में से थे जिन्होंने 836 से 885 ई. तक भारत पर अपना राज स्थापित किया था। इनके शासन काल में भारत को सोने की चिड़िया की उपाधि दी गई थी। भरगढ़ ने सभी युवाओं से अपील की जिस तरह से भोज की सेना में 36 जातियों के लोग थे उसी तरह से गुर्जर युवाओं को भी अन्य जातियों के साथ सद्भावना के साथ रहने की प्रेरणा लेनी चाहिये। अन्तर्राष्ट्रीय गुर्जर दिवस पर निकाली गई विशाल वाहन रैली का समापन गोनेर के देवनारायण मन्दिर पर किया गया।

इस रैली में मुख्य रूप से प्रदेश अध्यक्ष मनीष भरगढ़, आरक्षण संघर्ष समिति के अध्यक्ष विजय बैसला, पार्षद अमर सिंह गुर्जर, युवा मोर्चा अध्यक्ष अनिल गुर्जर, NSUI के अलवर जिलाध्यक्ष सतीश पटेल (रामगढ़िया) जिला अध्यक्ष हेमराज भाटी, प्रदेश महासचिव, कमल लांगडी, केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य रमेश बोकण साथ ही वीर गुर्जर महासभा राजस्थान और जयपुर शहर के सभी सदस्यों ने हिस्सा लिया। अंत में प्रदेश अध्यक्ष मनीष भरगढ़ ने सभी का आभार प्रकट किया।

गुर्जर प्रतिभा परिचय

परिचय : बीकानेर के जाने-माने एडवोकेट देवेंद्र गुर्जर जिला एवं सत्र न्यायालय बीकानेर में उपेक्षित और पीड़ितों को न्याय दिलाने के कार्य में मन-वचन-कर्म से सक्रिय हैं। देवेंद्र गुर्जर मूलतः नागौर जिले की ग्राम पंचायत भाटीपुरा के निवासी हैं। देवेंद्र गुर्जर के पिता श्री कानाराम गुर्जर (रेलवे बीकानेर में कार्यरत रहे हैं) समाज सेवा में सक्रिय कानाराम गुर्जर जहां तक संभव होता है, गुर्जर समाज के सामाजिक कार्यों की गतिविधियों में निष्ठा पूर्वक कार्य करते हैं।

कानाराम गुर्जर उत्तर पश्चिम रेलवे जोधपुर में भूतपूर्व सहायक वित्त सलाहकार पद पर कार्य करते हुए सेवानिवृत हुए हैं। कानाराम गुर्जर वर्तमान में अपना निवास स्थान बीकानेर में ही बनकर वहां निवास कर रहे हैं। कानाराम गुर्जर प्रारंभ से ही समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता को ही गुर्जर समाज के पिछड़ेपन से मुक्ति का एकमात्र उपाय मानते रहे हैं। उन्होंने अपने पुत्र-पुत्री को शिक्षा दिलाने में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं छोड़ी है। उन्होंने अपनी तीनों पुत्रियों को, एम.ए., एम.एस.सी., B.Ed. स्तर तक शिक्षा दिलवाकर उनका विवाह किया है। वर्तमान में उनका परिवार बीकानेर सुभाष पुरा में निवास कर रहा है। कानाराम रग्गल के पुत्र एडवोकेट देवेंद्र सिंह गुर्जर का विवाह जयपुर जिले में दूदू तहसील के नारायण निवासी रामनारायण जी हांकला की पुत्री के साथ संपन्न हुआ है। देवेंद्र सिंह गुर्जर का छोटा भाई बी.ए. फाइनल ईयर डूंगर कॉलेज में अध्यनरत है। देवेंद्र सिंह गुर्जर समाज के लोगों को विधि सलाह से संबंधित किसी कार्य के लिए निराश नहीं करते हैं। इसके अतिरिक्त भी समाज की जरूरतमंद लोगों की सहायता करके उन्हें प्रसन्नता महसूस होती है।

देवेंद्र सिंह गुर्जर का मानना है कि गुर्जर समाज के उत्थान के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में चारित्रिक गुना का विकास करके समाज को अग्रणी पंक्ति में खड़ा करने के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुरूप कार्य करें। व्यक्तित्व के विकास से ही समाज का उत्थान संभव है। समाज की विकास के लिए आवश्यक है कि हम शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ अर्थोपार्जन की दिशा में भी हमारी भावी पीढ़ी को तकनीकी शिक्षा व रोजगार प्रदान करने वाली वाली है कि शिक्षा उपलब्ध करवाने का प्रयास करें। शिक्षा के साथ-साथ बच्चों में सामाजिक संस्कार होना आवश्यक है।

सामाजिक संस्कारों का दान करने की सर्वाधिक क्षमता मातृशक्ति में है इसलिए आवश्यक है कि हम बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने की दिशा में कार्य करें। लोकतांत्रिक व्यवस्था में राष्ट्र के प्रति निष्ठावान रहने के लिए आवश्यक है कि हम हमारे पूर्वजों द्वारा देश, धर्म और संस्कृति के लिए किए गए कार्यों के इतिहास से हमारे अपने परिवार और बच्चों को अवगत करवाते रहें। देव चेतना परिवार सामाजिक सरोकार के धनी देवेंद्र सिंह गुर्जर के उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

भगवान श्री देवनारायण चालीसा

ॐ नमो गणपति गुरू, नमो सरस्वती माया
देव सुयशवर्णन करूँ, कण्ठ विराजआय।।

-चौपाई-

नमो देव नारायण स्वामी घट घट के प्रभु अन्तर्यामी॥
जगत उजागर सब गुण। सागर देवनारायण नटवर नागर॥
जय जय जय भक्तन हितकारी इच्छा पूरण करो हमारी।।
भोग मोक्ष के दाता देवा। निस दिन करूं आपकी सेवा॥
दे सत पंथ कुपंथ निवारो। किरपा कर भव पार उतारो।।
अधम उधारण नाम तुम्हारा। भक्त मनोरथ पूरण हारा।।
घर कर संत रूप यदुराया साडू माता को याचन आया।।
करत स्नान साडुमाता सुन आई अपने कर खुद भिक्षा लाई।।
प्रेम विवश ज्यों की त्यों धाई। बिना वस्त्र पहने चली आई।।
नग्न देख प्रभु संकुचे मन माहीं पीठ फेरली जब यदुराई।।
तब साडूमाता यो वचन उचारा। तुम हो जगत पिता करतारा।।
मैं बच्ची तुम हो पितु माता। नग्न देख प्रभु क्यों शरमाता।।
सुनत बच्चन भला भगवन्ता बाल बढ़ाय तन का तुरन्ता।।
ले भिक्षा यों कहत मुरारी। मांग बर इच्छा अनुसारी।।
जो तुम स्वामी देना चाही। आप समान पुत्र बक्षाओं।।
मम समान और को भोरी। मैं सूत होई मात हित तोरी।।
मैं छलने आया था तौही। उलटा छला मात तै मोही।।
नापा साढू मात को मारण धाया। उसी समय प्रकटे यदुराया।।
आम्बा निम्बा मरे सिरदारा। जिन्दा करया आप करतारा।।
किशना खाती का कोढ़ मिटाया। कर दीन्ही कंचन सी काया।।
प्रकटया जब प्रभु मालासेरी माही राण नगर सारी थर्राई।।
मारण विप्र आपको आया। संग आपके भुजंग पाया।।
दुजा विप्र आया शैताना। बने आप उसी वक्त जवाना।।
तीजा विप्र आया कर रीसा। वृद्ध रूप धरिया जगदीशा।।
काल भैरव असुर बड़भारी। वश में किया आप गिरधारी।।
मालवा देश माहि गोविन्दा छोछु भाट को किना जिन्दा।।
धारा नगर राजा की बाई। पीपलदे शुभ नाम कहाई।।
ताके कोढ़ नशाये दाता। अखिंया खोली हरे सन्तापा।।
भुणा जी को लेने ताई। छोछु भाट को जवान बनाया।।
भुणा जी को कीना वीरा। टूट पड़या जुड़ी जंजीरा।।
आप धणी देमाली आया। बीला जी का कोढ़ हटाया।।
वैधा नाथ की धुणी आया। बहु कोढ़िन का कोढ़ हटाया।।
जैतु का सब संकट मेटा। इच्छा पुरी दीन्हा बेटा।।
लाला था इक जात बलाई। उसकी आप दो देह बनाई।।
दीनों के रक्षक कहलाओ। म्हारे ताई क्यों शरमाओ।।
आशा पूरण करो हमारी। अरजी सुणियो बेग मुरारी।।
मनोकामना पूरण किज्यो। अष्ट सिद्धि नव निधि वर दीज्यों।।
कई मोहि मारे ताना। लज्जा तुम राखी भगवाना।।
हंसी जो मेरी करवासी। उर्ध्वं विड़द आपकी जासी।।
आप हमारे गुरू पितु माना। आप ही मित्र द्रव्य धाता।।
आप कृपा बुद्धि बल पाऊँ। दाता तुम कह याचन जाऊँ।।
जय जय जय भुणा जी के भ्राता। कुमति निवार सुमति दाता।।
दुष्टों को अब बेग खपाओ। धर्म ध्वजा जग में फहराओ।।

- दोहा -

चालिसा यह प्रेम से, जो नित पढ़ें प्रभाता।
मनोकामना पूरसी, श्रीदेमाली नाथ।।
तन मन से शनिवार को पाठ करें चालिस।।
भैरूराम सब मिटे, सुख हो विश्वा बीस।।

भगवान श्री देवनारायण जी की आरती

ओउम् जय श्री देव प्रभु, स्वामी
जय श्री देव प्रभू सूत माता साडू
माता साडू के आनन्दकंद विभोग।।
ॐ कमल पुष्प अवतारी, नाथ दयाधारी।
मानव वंश उद्धारक, विपत हरो सारी।।
नील अश्व आरूढ, भजूं द्वार खड़े तेरे।
सुमरण नाम तिहारो, कष्ट मिटत मेरे।
अधांगिनी पंवार पीपलदे, प्राण पति प्यारे।
सुख सम्पत्ति के दाता, सबके रखवाले।।
दे वरदान बुद्धि सत्संगति, मानव गुण देवा।
तन-मन-धन सब कुछ अर्पण करू चरणन सेवा।।
कलयुग पाप विनाशक, सच्चे सुख राशि।
मन मंदिर में पूँजू, घट घट के वासी।।
श्री देवनारायण जी की आरती, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै।।

पुस्तक समीक्षा : पुस्तक गांव और अम्मा की सारगर्भित समीक्षा

समीक्षा कड़ी : 40 (ममता महक)

भल्यांई आ बस्यो सैहर मै यो म्हारो तन।

पण न' भूलूँ गांव अर अम्मा एक बी दन।

बाळपण खेल मं गम जावै छै मोट्यारपणो खाबा कमाबा मं कढ जावै छै पण जद यै दोनी उमर बीत'र मनख बुढारा की आडी बधबा लागै छै तो ऊनै केई-केई बखत नचीता होर बैठबा को औसर मलै छै। असी बखत पै ऊ तो छानो बैठ जावै छै पण मन मं उपजता बच्यार बरबूळ्या की चाल लेर हिरदा

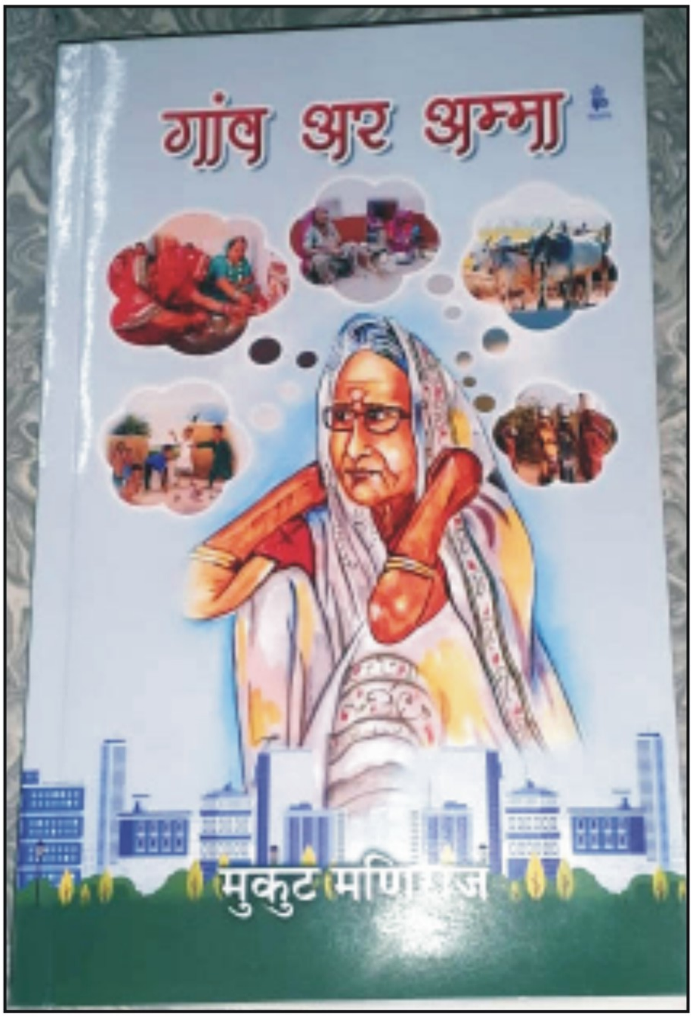

की अळ्याँ गळ्याँ मै धामाधूम मचा दे छै। ये बच्यार और काँई कोईनै पराणा दनाँ की ओळ्यूँ छै। याँ मै बाळपणा का लाड चावला अर मनवार छै, गाँव गर्याळा का तीज थुहार छै, बडा बूढां की डाँट फटकार छै, सुख दुख का घूघरां की झणकार छै। अर पाछला दनाँ की ये ओळयूं जद मुकुट जी जस्या साहित्यैकार का मन मै लगतमार ठपकारा देवै तो फेर वा सबदबद्ध हो'र पोथी बण जावै छै। 'गाँव अर अम्मा' यो नाँव छै मुकुट मणिराज जी की नुंवी पोथी को जीमै मुकुट जी नै गांव मै रची बसी अम्मा को अर अम्मा का मन की पी ? को बखाण कर्यो छै।

पोथी की पह्ली कविता छै, 'ऊ बाळपणो', यो बाळपणो आज का बाळक को कोइनै बल्कि ऊं बाळक को छै जै आज हेर्यां हेर्यां ई न' पावै। अब क्हाँ बच्या छै गुल्ली डण्डा, दड़ीमार घूंसड़ो, सतोल्यो, कुलाम ल्हाकड़ी, छांवली निरखबो, छियांपत्ती, पव्वो, छलूल्यो, सोळासार, न्हार छैळी, चंगा पो, पचेटा, अटळी मटळी, कोड्ढ़यां। अब तो न' वसी उळ्ळाई री' खेलबा की अर न उस्या बाळक र्या। अब तो बाळक जनमतांई बणा द्यो जावै छै बडो आदमी फेर ऊनै झूंक द्यां छां आपण अफसर बणबा की भट्टी मं।

बाळक, बालक नं र्या गुब्बारा होग्या
जे फूंक भर'र छोड़ द्या
असमान की थाक लेबा
करद्या धरती सूं दूरै
पण कुणनै दोस द्यां
हाथां करया कामड़ा छै
तारा तोड़बा की होड़ मं
म्हानै ई कोसल्यो यां को बाळपणो। (पृ.53)

गाँव को बाळपणो स्हैर सूँ न्याळो ई छै अर हो बी क्यूँ न्है गाँव को रंग ई न्याळो छै। भारतीय परंपरा, संस्कृति अर रीत रिवाज का साँचा दरसण करणा होवै तो गाँव ई निरखणी पड़ेगो। गाँवा को क्षेत्रफल भल्यांई स्हैरां सूँ छोटो छै पण हेत, नेह, परेम, अपणापण, हाँसी खुसी अर धीरज की जद बात होवै अर ई फीता सूँ जै नाप्यो जा सकै तो 'स्हैर सूं बड़ो छै गांव' -

आज बी गाँव संस्करती को

दुसालो ओढ'र चालर्यो छै
अर पुरखां को नीम धरम पाळर्यो छै
गांव, गांव हमेसा एक दूजा का
दुख-सुख मं खड़ो छै
गांव, ईं लेखैई स्हैर सूं घणो बडो छै। (पृ. 30)

स्हैर मं बसबा हाळा मनख गांव का मनख्या नै गांग्या क्हैर वानै नीचो मानै छै। वांका रहबा सहबा नै गांग्योपणो कहै छै। वांका रीत-नीत ने पिछड़ोपण मानै छै। गांव का मनख्याँ को अणजाणा सूँ बोलबो बतळाको वानै जोरी सूँ दखल अंदाजी लागै छै। गांव अर गांव की जिंदगी सूगली दीखै छै स्हैर हाळा नै। बात बात मै खाडै छै नखोटा। पण मुकुट जी यां स्हैरी मनख्यां सूँ अरज करै छै कै जा'र एक बखत देखो गाँव नै, जिओ गांव की जिंदगी नै अर नरखो वाँका मन नै जीमै हेत छै, परेम छै अर मान सम्मान छै-

खोळ मत देखै
ऊँके भीतर छुपी
मोवणी मूरत देख
पावणा डील मत देख,
ऊमे बैठी पावन आत्मा देख
जीवन, धन्य हो जावैगो
थनै गांव मं सुरग नजर आवैगो। (पृ. 33)

गांवां मै हेत अर नेह का धोरा ब्है छै। अर यां धोरां को अमरत जळ जी मनख नै प्यो होवै, बरसां बरस जी सूं डील सेळो करयो होवै, जीमै डाबक डूबा होती एक उमर खड़गी होवै ऊनै कस्यां बिसरयो जा सकै छै। अर मोट्यार तो एक बज्जी

फेर बी भूल ज्या पण बायरयां कस्यां बिसरैगी। भाग फाटयां ई मांथण्या अर बेवडा ले'र पाणी भरबा कुआँ पे जाबो, बळीता काण जंगळ मै मोळ्या लेबा जाबो, घर आँगणा लीपबा काण गार खोदबा जाबो, पूगै न्है पूगै चाँदा पै मोर माँडबो, ब्यावां स्यावां में बन्ना बन्नी गाबो, ग्यारस-चौदस की रात जगाबो, मेळा मै चुछक्यां अर पतासा खाबो, सावण का हींदा घालबो, लसण पाड़बो, धण्यां चणा सोरबो अर और बी कैई अणगणत काम छै जै बिसरबो तो कठण छै। गाँव मै जनमी, खेलती कूदती बड़ी होई, एक गांव सूं बधा हो'र दूजा मै आई अर व्हांई बूढी होई, अम्मा को मन गांव मै छै कै ऊंका मन मै गांव बस्यो छै क्हैबो कठण छै-

सोतां जागतां उठतां बैठतां
अम्मा की नैण बावड्यां मं
कंवळ की नाई तरै छै गांव। (पृ.68)

यां पंगत्यां मै तो जाणे पोथी को कस ई उतरयायो। नैणा नै बावड्या की उपमा दे'र गांव कै तांई कंवळ क्हैर मुकुट जी नै कंवळ का कैई अप्रत्यक्ष गुणां को बखाण कर द्यो।

अम्मा हाल बी जीरी छी गाँव की ई जिंदगी। अर ऊंकी आंख्यां हाल बी हैरे छै गांव का मनख्यां नै अर अटक्या भटक्या मल ज्या कोई गांव को तो फेर हरिया हो जावै छै गांव की ओळयूँ का सूखा रूखड़ा। आता जाता मनख्यां सूँ ठाम ठकाणो, जात-बरादरी बूजबी करै छै क्यूंकै यां स्हैर मै रहबा हाळा नै तो बखत ई कोइनै उकै गोडै बठबा को अर ऊंकी पराणी बातां सुणबा को।

अस्सी बरस का जीवन की
पूरी फिल्म छी अम्मा का म्हैला मं
कुणने बतावै कुण छै ज्ये ऊं की
भावना समझतो अर
दो घड़ी ऊंके गोडै बैठ'र
ऊंका मन का बोझ हळको करतो। (पृ. 83)

गांव अर अम्मा की लारां ई आठ-दस और विषयां पै बी कवितावां छै ई पोथी मै। 'माछळी,' 'घट्टी', 'छाजळो', 'कटोरदान', 'मत करजे माफ', 'धरमावतार', 'ओर सरैगी', 'ठेका लेर्या छां', 'म्हूं सड़क छूं', 'रेल', जस्या न्याळा ई भावां पै रची ये रचनावां बी घणी

सुहावणी बणी छै। 'रेत' शीर्षक पै पूरी ग्यारहा रचनावां छै, संदी को न्याळो रंग, न्याळो भाव अर न्याळो ई चाव। जी रेत को आपण मोल ई न्है समझां वा कतरी अणमोल छै यो एक साहित्यैकार ई पछाण सकै छै-

ऐ रे मिनखड़ा
ठुकरावै मत, ई सोनल रेत नै
रेत धरती मां को चीर छै
चूनड़ी छै, लहरियो छै
रेत सूं हेत मायड़ को मान छै
मां की अस्मिता को भाव है। (पृ. 149)

कुल मिलार पोथी की संदी रचनावां पढ़बा जोग छै। ई मै गांव गरियाळा अर वांमै रहबाळा का कैई कैई रूप समाया छै। 'बाळपणा' सूं सुरू हो'र 'रेत' तांई पुगता पूगता पाठक नै भान हो जावै छै कै या जूण रेत की नाई मुट्ठी मै सूं सरकती

जारी छै। अर एक एक घड़ी एक एक घटना बणती जारी छै। ओळ्यूं जै आर धमोड़ा देगी म्हैड्ला की कुवाड़्यां पै जद यो तन को ओवरो होबा लागैगो पराणो, भींत्या पै चढ्यो रंग रोगन फूल फूलर खरबा लागैगो तो भीतर को गारो दीखबा लाग ज्यागो। यो गारो कोइनै ये छै पाछला दन, जीमै भकल र्यो छै म्हीं म्हीं घटना को खांखलो जै आपड़ तोई चलकबा लाग ज्यागो।

मुकुट जी की या पोथी हाड़ोती सबदमाला अर क्हैणावतां की बी साँची बांदरवाळ सी लागी। काँवळा, जीवन जेवड़ी, मायता, जरपट्याँ, आट्यो -पाट्यो, आंवळ्यो भैंसो, मणस्यो, नागतणा, फेफरयां, घींसोड्यां, रकचूंच्या, सम्यो, थापाथूर रणझोडो अर अस्या ई कैई सबद छै जै म्हनै प्हैली बार अर कोई कोई तो घणा बरसां बाद सुण्या छै। अस्यांई कविता की पोथी होता सतां बी कतनी ई क्हैणावतां छै ईमै - झुंझाडा फूंफाडा खाबो, गाय न बाछी नींद आवै आछी, ओछी बस्ती मां को पेट, कोई आई को न बाई को, रीत का रायता, दुखै जीकै दूखणो अर चालै जीकै पीड़, भूल्या बाण्यां को ढूमला मै हाथ, बैठ्यो धाकड़ कांई करै कांई नै तो भींत ढसार कूळोई चुणै, गहल्यो ठाकर करै पराणी बात, जसी कैई क्हैणावतां घणी रूपाळी लागी। विषै सारूं संदी, रचनावां चोखी छै पण कैई ठाम बातां को दोहरान खटक्यो ईको कारण ओळै दोळै का शीर्षक बी छै। पण या छै के व्यंग्य, गांभीर्य, सहजता, सरलता ल्यां ये कवितावां अपणी सी लागी। हाड़ोती, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी सबदां को यो भकेलो रूपाळो लाग्यो। जरूरत मुजब सबद पंगत्यां मै सोवणा लाग्या। छंदां अर गीतां का परणा लिखारा मुकुट जी को नुयी कविता मै सुहावणो रचाव अणूठो छै।

पोथी - गांव अर अम्मा
लेखक - मुकुट मणिराज
समीक्षक - ममता महक

दिव्य नाद प्रेमधुन ध्वनि प्रतिध्वनि अनन्य

नि:शब्द मौन अन्तरंग- खामोश अक्षरों की आवाज...

हम जानते हैं कि अक्षर **बी** का सूक्ष्म से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन अक्षर **सी** का किसी मांसपेशी से क्या लेना-देना है? बुधवार में **डी** की भूमिका हम परिभाषित नहीं कर सकते हैं कि **जी** को मच्छर या संकेत में क्यों मौजूद होना चाहिए?

सच कहूँ तो, क्या तुकबंदी में **'एच'** घंटी बजाता है? और क्या मारिजुआना में मौजूद **जे** को कोई सूंघ सकता है? कौन जानता है कि घुटने में **के** दस्तक क्यों नहीं देगा और चाल या पिंडली में **रु** बात क्यों नहीं करेगा।

स्मरणीय में पहला **एम** समझना कठिन है क्या कॉलम में शापित **एन** कभी खड़ा होगा? हम यह नहीं कह सकते कि **पी** को भजन में या मनोविज्ञान में और **एस** को अकेले ही मलबे से बाहर निकाला जाता है।

जब आप सीटी सुनते हैं तो क्या **टी** सुनाई देती है? **डब्ल्यू** नहीं लिख रहा है, यह गलत है, कुश्ती करने की कोशिश मत करो **एक्स** एक नकली पेस में गलती है, सुराग समझे? चुप रहो, **जेड** से कोई मुलाकात नहीं, अलविदा, अलविदा!

एनआईए प्रो. यादव राज्य स्तरीय पं. गंगासहाय जोशी धनवंतरी अवार्ड से हुए सम्मानित

वी.बी. जैन 9261640571 देव चेतना

जयपुर। आस्था सांस्कृतिक संस्था के अध्यक्ष बीएम शर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान डीम्ड यूनिवर्सिटी (एनआईए) के रिसर्च डीन प्रो. छाजूराम यादव को चिकित्सा एवं मानव कल्याण के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए प्रसिद्ध राज्य स्तरीय पं गंगासहाय जोशी धनवंतरी सम्मान अवार्ड से महंत श्री हरिशंकरदास वेदांती, हाथोज धाम के महंत बालमुकुंद आचार्य जी महाराज और सर्व ब्राह्मण महासभा अध्यक्ष पं. सुरेश मिश्रा सहित गणमान्य लोगों के सानिध्य में सम्मानित किया गया। संस्था मंत्री चेतन व्यास ने मंच संचालन किया। एसोसिएट प्रो. महेंद्रप्रसाद ने प्रो. यादव को बधाई देते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के प्रो यादव एनआईए के मेघावी छात्र रहे और वर्ष 2008 में इसी संस्थान में लेक्चरर बन अल्प समय में अपनी मेहनत, लगन और उच्च अध्ययन से डीन रिसर्च के पद पर आसीन हैं।

हमें खुशी है कि प्रो. यादव ने अब तक आयुष मेगा अवार्ड, एनआईए लेटर आफ एक्सीलेंस, वैद्य के एल मिश्रा अवार्ड, बेस्ट थीसिस अवार्ड, योग्यता प्रमाण पत्र, कोविड वॉरियर अवार्ड, आईएएस कानपुर सर्विस एक्सीलेंस अवॉर्ड आदि प्राप्त किए हैं। प्रो यादव ने शरीर क्रिया पर पांच पुस्तकें लिखी है। जो आयुर्वेद छात्रों के कोर्स में है, रिसर्च स्कॉलर्स और अध्यापकों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करती है। प्रो यादव के 100 से ज्यादा रिसर्च पत्र विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। 80 से ज्यादा आयुर्वेद पर व्याख्यान दिए हैं, जिसमें बिड़ला आडिटोरियम में राजस्थान ट्रैवल मार्ट में 'आयुर्वेद मेडिकल टूरिज्म' पर दिया महत्वपूर्ण व्याख्यान भी है। एन.आई.ए. मीडिया प्रभारी प्रो राकेश नागर ने बताया कि प्रो यादव आयुर्वेद को जन-जन तक पहुंचाने व आयुर्वेद से लोगों को स्वस्थ करने के लिए जैसलमेर, जालौर, अजमेर, अलवर, सीकर, बूंदी, जयपुर आदि के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कैंप लगाकर सेवाएं देते रहते हैं।

जनशक्ति विकास फाउण्डेशन के अध्यक्ष और आज मीडिया सर्विस के प्रधान संपादक वरिष्ठ पत्रकार वी.बी. जैन ने प्रो. यादव को बधाई देते हुए कहा कि प्रो. यादव राजस्थानी भाषा के लिए भी काफी समर्पित है। राष्ट्रीय आयुर्वेद एक्सपो 2021 में प्रो यादव ने बहुत ही कम समय में आयुर्वेद एक्सपो में राजस्थानी भाषा की प्रमुख एकमात्र मासिक पत्रिका माणक के सानिध्य में आयुर्वेद डॉक्टरों के लिए राजस्थानी भाषा की उपयोगिता पर गोष्ठी कराई। जिसमें राजस्थानी भाषा के प्रसिद्ध कवि किशोर जी पारीक किशोर ने भी भाग ले सैकड़ों लोगों के आकर्षण का केंद्र बनाया, गोष्ठी का राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के कुलपति प्रो. संजीव शर्मा और विशिष्ठ अतिथियों ने भी लाभ लिया। प्रो.यादव को एन आई ए चांसलर प्रो. शर्मा, प्रो. बनवारीलाल गौड़, प्रो. मीता कोटेचा, प्रो. रामकिशोर जोशी, एमेरिटस प्रो ओपी शर्मा, डॉ. सारिका यादव सहित कई आयुर्वेद विशेषज्ञों और विद्यार्थियों ने बधाइयां दी।

श्री देवनारायण पाट्-ज्योति शक्तिपीठ विज्ञान

अनादि चित्त- चित्ति दृष्टि से गुर्जर शकार्य जाति, अपने गौरव के साथ श्री देवनारायण फड़ पाट ज्योति एवं 'गुर्जर देव दर्शन' प्रतीक मय स्वरूप से विद्यमान है। जिसका खंड- खंड बहु परिवर्तित रूप सनातन हिंदू नाम भारत में है, सभी संप्रदाय उसी के अंश हैं। जंबूद्वीप, अजनाभ खंड, भारतवर्ष और हिंदुस्तान उसी के विभागों का नामांतरण भर है। 'गुर्जर देश और आर्यावर्त' नाम भी उसी का इतिहास में प्राप्त होता है। ऋषि शब्द में 'ऋ' धातु है, जो श्रेष्ठार्थक- गुरुत्व और गत्यर्थक दोनों हैं। सूर्य जगतगुरु, जगत की आत्मा और जगत के प्रकाशक भगवान आदि देवनारायण हैं।

एक शब्द और प्रतीक का अर्थ दूसरे शब्द प्रतीक द्वारा व्यक्त होता है। गुर्जर शकार्य जीवन के बाह्य और अंतर्निहित स्पंदन हैं, जिनका अनुभव हमारा हृदय करता है। तब किसी अव्यक्त आनंद से चेतना भर जाती है। मानव बुद्धि स्वयं में एक अजेय शक्ति मात्र है, वह जिस रंग में रंगी रहेगी, उसी से काम करेगी वह न तो बुरी है और न भली है। मानव जन्म जीवन और मृत्यु रूपी दो अंतों के बीच में ही जीवन के स्पंदन का अनुभव किया जा सकता है। केवल जीवित रहना पशु जीवन है, अपने अस्तित्व को कायम रखने और अपनी परंपरा को आगे बढ़ाने की प्रवृत्ति तो प्रकृति जीव मात्र को प्रदान करती है।

मनुष्य का जीवन संघर्ष, अपनी दिव्यांश चेतना को आगे बढ़ाने, इस दुनिया में भी और उस दुनिया में भी , इसी के लिए है। मनुष्य का श्रेष्ठत्व अपनी प्रजाति रूप शुभ संकल्प युक्त विचारों पर ही अवलंबित रहता है। दिव्य शिव संकल्प युक्त मन ही वह शक्ति है जो अपने मननात्मक गुण के कारण उदार विचारों की किरणें सब और फैला सकता है। सृष्टि के आरंभ में विद्यमान एक ही 'सत्' था, फिर उस एक बीज से यह अनंत विश्व ब्रह्मांड कैसे पैदा हो गया! वही अनादि सत्य हम हैं ,निर्माण शक्ति धारण करने वाली चित्त शक्ति सत्य है।

हमारे ऋषियों का संदेश था ,दिव्यांश मनुष्य में जो अंश जन्म रहित है, उसे तेजस्वी करो। वही जन्म रहित अंश देखने वाला, स्पर्श करने वाला, सुनने वाला, चखने वाला, संकल्प करने वाला, कर्ता और विज्ञानात्मा जीव पुरुष कहा गया है। ऋषियों के अनुसार संकल्प करने वाला भी 'वही' है, तथा कर्म का करता भी 'वही' है।

मानव जीवन को कर्ममय और सार्थक बनाने में जो शक्तियां काम करती है उनमें चित्त और संकल्प का महत्वपूर्ण स्थान है। विषयों के अनुसार वह उनका भी अंग है और महान का भी महान है। दिव्य प्रज्ञा स्वरूप श्री देवनारायण पाट्- ज्योति 'ईटों में श्याम' प्रतीक श्री देवनारायण चार धाम यात्रा स्वरूप सत्य को जानने का मार्ग श्री देवनारायण फड़ लोकवार्ता प्रशस्त करती है, वह ज्ञान जो कुछ है यहां या वहां है, सबका उसी के अनुरूप परिचय देता है, उसे जानने का संकल्प और चित्त के दूसरा कोई साधन नहीं है। उसका सही-सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए और कौन सा ज्ञान होगा ? क्योंकि वह सत्य ज्ञान ही है सत्य और ज्ञान दो नहीं एक ही है। भगवान शिव द्वारा सवाई भोज को 12 वर्ष की माया काया के वरदान का प्रतीकात्मक -मनुष्य को प्राप्त यह शरीर समुदय मात्र है, जन्म लेने या अस्तित्व में आ जाने के अतिरिक्त यह कुछ भी नहीं है। इस दृष्टि से बगड़ावतों का जीवन दर्शन प्रेय से आरंभ करके श्रेय के रूप में परिणत हो जाना अभिप्रेत था-यह गुरुतर गुरु गुर्जर प्रजाति अथवा वंश की बहुत बड़ी विशेषता, हमारा ध्यान आकर्षित करती है, जो श्री देव नारायण के अवतार के समय कलयुगी बौद्धिक कोलाहल के युग में भी गुर्जर वंश की विशेषता को प्रतिपादित करती है। बगड़ावत भारत में वर्णनात्मक जो कुछ हम देख सुन रहे हैं, उससे भिन्न भी बहुत कुछ है और दृश्य तत्वों सें अधिक अदृश्य तत्वों से मनुष्य का जीवन प्रभावित रहता है। इस रहस्य की

ओर बगड़ावत भारत लोकवार्ता संकेत करती है।

गुर्जर आदि तीर्थ नाग पहाड़ पर श्री देवनारायण की पाट्-पूजा प्रतिष्ठार्थ प्राप्त होने वाली 'ईंट' जो आज भी मिलती है, महत्त्व का प्रतीक है, जो सृष्टि, स्थिति और प्रलय का कारण रूप है। जिससे यह सब नित्य व्याप्त होता है, जो ज्ञाता, काल, कर्ता, गुणी, सर्वज्ञ है, उससे ही शासित होकर कर्म, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आकाश, विवर्तित हुए, वह वर्तमान युग हेतु प्रबोधन विचारणीय है।

बगड़ावत भारत लोक वार्ता में समाधिस्थ सवाईभोज को 12 वर्ष की माया- काया का वरदान देने वाले महा योगी शिव गुर्जर शकार्य जीवन में ऋषि परंपरा के प्रतीक हैं, जो समाप्त हो गई। सवाईभोज पत्नी साडू बगड़ावतों को छलने आए चतुर्भुज नारायण से कहती है-शिव सरीखे योगी गुरु बगड़ावतों की ड्योढ़ी पर धूणी तपते हैं।

प्रतीत होता है यह ऋषित्व का गुरुत्व में स्थानांतरण है। जिस प्रकार गुण और कर्म के भेद से चारों वर्णों की व्यवस्था करने की बात भगवान कृष्ण ने गीता में कही है। उन्होंने गुण और कर्म के भेद से वर्ण व्यवस्था की थी, जाति व्यवस्था नहीं। ऋषि परंपरा के गुरुत्व में स्थानांतरण से बौद्धिक तर्क और निर्णय के आश्रय वर्ण व्यवस्था कठोर 'जाति' में बदल गई। आर्ष ऋषि कृत वचनों के संबंध में विचारशील विद्वान अपने-अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं।

काम प्रेरित प्यार और आत्मीय प्रेम क्या है?

वर्तमान में फेसबुक और वाट्सएप पर बहुचर्चित प्रेम एक ऐसा विषय है जिस पर बहुत लोगों ने अन्तरंगता और दिल की गहराईयों से बहुत कुछ लिखा है।

आइए, हम प्रेम और प्यार में क्या अंतर है? इस बात का मौलिक चिंतन करें। अधिकांश लोग प्रेम और प्यार में अंतर नहीं कर पाते हैं। वस्तुतः प्रेम प्यार की आत्मा है। प्रेम अंतरंगता का शीर्ष है तो प्यार अन्तिम सिरा।

प्रेम करो प्यार नहीं

प्रेम मुक्त होता है, आकाश में उड़ते पक्षी की तरह, प्यार कैद होता है, पिंजड़े में तड़पते पक्षी की तरह।

एक व्यक्ति ने एक तोता पाल रखा था। तोता और उस व्यक्ति का आपस में बहुत प्रेम था। एक दिन तोते ने पिंजड़ा खुला देखकर बाहर निकलने का मन बनाया और उड़ गया। उस व्यक्ति को जब यह पता चला तो उसे बहुत दुःख हुआ और सोचने लगा कि आदमी की तरह जानवर भी धोखा देता है। उसे प्रेम से पीड़ा होने लगी।

एक बार वह व्यक्ति गाँव से आ रहा था। रास्ता बहुत लम्बा था। थककर वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। वह उदास था और उसी समय वह तोता आया, उसके कंधे पर बैठ गया। उससे प्रेम की बातें की। उस व्यक्ति का मन प्रसन्न हो गया। उसे वापस अपने शहर की ओर जाना था। सो वह चलने के लिए तैयार हुआ। तोते ने उसे प्रेम से फल लाकर दिए और उन फलों से उसकी भूख भी तृप्त हो गई। उस व्यक्ति ने तोते की बहुत प्रशंसा की और उसे अन्तर्मन अन्तरंग से प्रेम दिया। तभी तोता उड़कर चला गया। वह तोता उस आदमी को संदेश दे रहा था कि बंधन में रहकर ही प्रेम नहीं होता है, निर्बन्ध होकर भी प्रेम किया जा सकता है।

दृष्टान्त है कि व्यवहारिक रूप से एक बार प्रेम और प्यार मिले, तो प्यार ने प्रेम से पूछा तुम क्या करते हो तो प्रेम ने बड़ी मासूमियत के साथ कहा 'मैं उन आँखों में खुशी लाता हूँ जिनमें तुम आँसू छोड़ जाते हो।'

प्रेम अन्तर्मन अन्तरंगस्पर्श की तरह स्फूर्ति और आनन्द देता है और प्यार तेज बयार (हवा) की तरह झोंका दे जाता है।

प्रेम श्वांस की तरह जीवन में समा जाता है, प्यार खाँसी की तरह जीवन को दुःखी कर जाता है। प्रेम असीमित होता है और प्यार सीमित।

प्रेम हवा की तरह वहाँ तक बहता है, जहाँ तक आकाश है और प्यार आकाश में गुब्बारे की तरह तब तक बहता है जब तक उसमें हवा है।

प्रेम घनात्मक है प्यार ऋणात्मक है।

प्रेम चित्र को फ्रेम की तरह कस देता है और प्यार चित्र की तरह फ्रेम में कस जाता है। सच कहें तो प्यार हाथ की कलाई में बंधी घड़ी की कीमत और डिजाइन देखता है जबकि सच्चा प्रेम समय देखता है। बस थोड़ा सा अन्तर्मन अन्तरंग झांककर प्यार उसी से करो जिसे तुम चाहते हो और प्रेम उससे करो जिसे तुम नहीं भी चाहते हो।

सरदार पटेल जयन्ती : राष्ट्रीय एकता दिवस

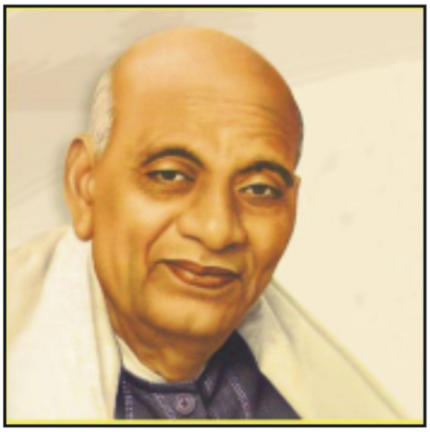

✍ **मोहन लाल वर्मा**

भारतीय जनमानस आज स्वतंत्र भारत के नव निर्माण के कुशल शिल्पी सरदार बल्लभ भाई पटेल के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रेरणा लेकर उनके आर्थिक लोकतंत्र स्थापना के चिंतन को स्मरण करने की दृष्टि से सरदार पटेल जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मना रहा है। मेरी दृष्टि में सरदार पटेल का जो चिंतन है वह हमें सांस्कृतिक अखंड भारत निर्माण के सूत्रों को खोजने की दिशा में प्रेरित करता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन सभी पूर्व की राजनीतिक स्थापनाओं को खारिज कर दिया है जो सरदार पटेल के व्यक्तित्व को हाशिए पर धखेलती रही है। गुजरात में सरदार सरोवर पर सरदार पटेल की स्थापित प्रतिमा को स्टेच्यू ऑफ यूनिटी का नाम देकर समस्त भारतवासियों को सभी मतभेदों को भुलाकर राष्ट्र के नवनिर्माण में लगने का संदेश देते हुए भारतीय सामासीक संस्कृति का पुनरावलोकन करने की दिशा में भी प्रेरित किया है।

प्रश्न यह है कि सामाजिक आर्थिक विषमताओं के वर्तमान दौर में भारत राष्ट्र के पुनर्निर्माण की दृष्टि से भारत में सांप्रदायिक हिंसा को नकारते हुए सामाजिक आर्थिक संघर्ष को राष्ट्र निर्माण की दिशा में कैसे परिवर्तित किया जाए, इसमें सरदार पटेल के चिंतन व्यक्तित्व और कृतित्व का क्या योगदान हो सकता है। इस समय देश के अधिकांश भाग में कानून व्यवस्था भंग होती दिखाई दे रही है। अपराधियों के गिरोह खुलेआम उद्योग धंधों में लूटपाट और खुलेआम हत्याएं कर रहे हैं। सांप्रदायिक कट्टरता के चलते 'लव जिहाद' जैसी घटनाएं लोकमानस को संतप्त कर रही है। अपराधों का राजनीतिकरण हो गया है और सार्वजनिक जीवन भ्रष्टाचार के चलते प्रदूषित हो गया है। साहित्य और कला जगत में संप्रदायवाद, जातिवाद, आतंकवाद को अतिवादी दृष्टिकोण से रेखांकित करते हुए सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को परिवर्तित करने की दिशा में अप संस्कृतिकरण की बयार बह रही है। लोग सामुदायिक गिरोह के रूप में संवैधानिक अस्मिता को चुनौती दे रहे हैं। आम आदमी के लिए न्याय प्राप्त करना दूभर हो गया है। ऐसी स्थिति में देश का जनमानस आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना के प्रति सनातन शाश्वत नैतिक मूल्यों की छाया में सरदार पटेल की राष्ट्र निर्माण की संकल्पना की ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक एवं आवश्यक है। अखंड भारत के राजनैतिक विघटन को सामाजिक सांस्कृतिक एकत्व की दिशा में प्रेरित करने के लिए साहित्य और कला जगत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन सभी संभावनाओं को तराशने की आवश्यकता है जो आत्मनिर्भर समृद्ध राष्ट्र का निर्माण करने में सक्षम हो सके। महिला सशक्तिकरण, वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव का सदुपयोग तथा जागृत युवा शक्ति इसमें अपना विशेष योगदान दे सकती है।

यह सर्वविदित है कि सरदार पटेल ने राजनीतिक जीवन का प्रारंभ गांधी जी के अनुयाई के रूप में किया था। अपने संगठन कौशल और संकल्प शक्ति के बल पर उन्होंने खेड़ा और नागपुर झंडा सत्याग्रह में विशेष भूमिका निभाई। अहमदाबाद नगरपालिका के निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में अंग्रेज अफसरों से टक्कर ले कर उन्होंने अपनी प्रशासनिक कुशलता का परिचय दिया। देश के किसान वर्ग के हित में बारडोली सत्याग्रह उनके द्वारा अहिंसा की महान शक्ति का सफलतम प्रयोग था। इसी आंदोलन में सरदार वल्लभ भाई पटेल के असाधारण नेतृत्व के कारण जनता द्वारा उन्हें सरदार की उपाधि दी गई।

प्रांतीय सरकारों की स्वायत्तता के नाम पर अंग्रेजों की कांग्रेसमें विभाजन करने की कूटनीति को सरदार बल्लभ भाई पटेल ने अपनी मजबूत पकड़ के कारण नाकाम कर दिया। अंतरिम सरकार में गृह मंत्री बनने के बाद 500 से अधिक देसी रियासतों को भारतीय संघ में विलीन करके उन्होंने भारत को और अधिक खंड-खंड होने से बचा लिया और एकीकृत शुद्ध राज्य -राष्ट्र के निर्माण में महान योगदान दिया।

स्वतंत्र भारत में सत्तारूढ़ राजनैतिक नेतृत्व द्वारा लगातार सरदार पटेल को लोक समाज की दृष्टि से ओझल करने के प्रयास निरंतर जारी रहे। भारत राष्ट्र निर्माण के कुशल शिल्पी के योगदान को स्वतंत्र भारत में लगातार भुलाने का प्रयास राजनीतिक षड्यंत्र के रूप में हुआ इसे कौन नहीं जानता है। उन्हें भारत रत्न के योग्य नहीं समझा गया। सन 1991 में प्रधानमंत्री चंद्रशेखर की सरकार ने उन्हें भारत रत्न सम्मान देकर भारत वासियों के मन की पीड़ा को दूर किया। भारत की जनता के मन में यह प्रश्न सदा बना रहेगा कि जो राष्ट्रीय सम्मान जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्री रहते तथा राजा जी, राजेंद्र प्रसाद, इंदिरा गांधी, एमजी रामचंद्रन को मिल सकता था वह सरदार पटेल को सन 1991 से पहले क्यों नहीं मिला ?

भारतवर्ष इस समय सामाजिक, आर्थिक, सांप्रदायिक विघटन के जिस दौर से गुजर रहा है उसमें सरदार पटेल की सुव्यवस्थित राष्ट्र राज्य की कल्पना हमारा मार्गदर्शन कर सकती है। वर्तमान समय में बढ़ती अपराधों के राजनीति की करण और राजनीति के अपराधीकरण की प्रवृत्ति को हतोत्साहित किए जाने में सरदार पटेल का त्याग और बलिदान प्रेरक शक्ति प्रदान कर सकता है।

वर्तमान समय में देश में राजनीति एवं पूंजी के संरक्षण में आतंकवाद और सांप्रदायिक तत्वों को उभारे जाने की साजिश रची जा रही है। धार्मिक असहिष्णुता तेजी से देश में अपने पैर पसार रही है। संसदीय संस्थाओं और न्यायपालिका की गरिमा को खुलेआम नेस्तनाबूद करने की दिशा में आगे बढ़ाया जा रहा है। देश के बुद्धिजीवी एवं मजदूर किसान वर्ग के लिए यह आवश्यक प्रतीत हो रहा है कि भारत राष्ट्र के नव निर्माण में सरदार पटेल के योगदान से युवा पीढ़ी को अवगत करवाया जाए, जिसकी पिछले वर्षों में लगातार उपेक्षा होती रही है।

इतिहास और साहित्य जगत के लोग यह इंकार नहीं कर सकते हैं कि महात्मा गांधी के बाद हमारे तीन अत्यंत महत्वपूर्ण राष्ट्रीय नेता रहे-जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, बाबू राजेंद्र प्रसाद, स्वतंत्रता आंदोलन के समय मुसलमानों के भारतीय राष्ट्रवाद से अलग हो जाने के कारण मौलाना आजाद का कद भी छोटा हो गया था। नेहरू गांधी परिवार तथा उनके प्रभुत्व वाली शासन व्यवस्था ने सरदार पटेल के प्रति जो सुविचारित अपमान और विद्वेष दिखाया वह अब जग जाहिर है।

भारतवर्ष के किसान मजदूर और जागृत सामाजिक संगठनों ने उन्हें सरदार की उपाधि दी और आज भी उनका उसी आदर भाव से स्मरण कर रहे हैं। सरदार पटेल हमेशा संभव की ओर बढ़ते रहे उसका निश्चय करने के बाद उन्होंने सफलता प्राप्ति के लिए अपने सारे साधनों को संगठित करके संगठन शक्ति के बल पर सफलता अर्जित की।

सरदार पटेल ने क्रिमिनल ट्राइब्स को विमुक्त जनजातियों में परिवर्तित करके तथा डॉक्टर अंबेडकर को सत्ता के नए ढांचे में शामिल करके अनुसूचित जातियों को संतुष्ट करने का प्रयास किया और संविधान में कुछ अनुच्छेद और खंड डालने में मदद की थी ,जिससे अनुसूचित जातियों कथाअनुसूचित जनजातियों और पिछड़े वर्गों की कठिनाइयों के शांतिपूर्ण समाधान की व्यवस्था हो सके। इस सब को दृष्टिगत रखते हुए कहा जा सकता है कि लोह पुरुष सरदार पटेल में राष्ट्र भक्ति के अपने पूर्वजों के गौरव को पुर्नस्थापित करने की दिशा में एक व्यवस्थित राज्य का ढांचा तैयार करने का काम किया जिसके अंतर्गत ही सामाजिक, आर्थिक, सांप्रदायिक अराजकता के अंतर्गत नहीं-स्वतंत्र भारत में आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना की कल्पना को समृद्ध करते हुए भारत राष्ट्र को अखंड एकात्मय स्वरूप प्रदान किया जा सकता है। सरदार पटेल जयंती के अवसर पर हम सब मिलकर संकल्प करें कि सरदार पटेल के सपनों के साकार होने तक हम अपने कर्तव्य कर्म से भूमंडलीकरण के युग में आत्मनिर्भर स्मृद्ध भारत राष्ट्र के निर्माण के लिए मन वचन कर्म से कार्य करते रहेंगे। भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों में आए क्षरण को दृष्टिगत रखते हुए, सनातन शाश्वत नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने की दिशा में अग्रसर होते रहेंगे।

जय जय भारत माता, जय-जय अखंड भारत
मातृभूमि तेरा वैभव अमर रहे।

देव चेतना मासिक पत्रिका द्वारा
आगामी अंक दीपावली विशेषांक
के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।
सभी सहयोगी, प्रधान संरक्षक/मुख्य संरक्षक एवं 5 वर्षीय सहयोगी सदस्यों से विनम्र आग्रह है कि विशेषांक में अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देकर अथवा दीपावली का शुभकामना सन्देश देकर पत्रिका को आर्थिक सहयोग प्रदान करें जिससे पत्रिका का नियमित प्रकाशन सुनिश्चित हो सके। - सम्पादक

त्रिपुरा मुख्यमंत्री ने फोर्टी से किया सीधा संवाद

त्रिपुरा में राजस्थानी उद्योगपतियों को निवेश के लिए किया आमंत्रित

वी बी जैन 9261640571

देव चेतना जयपुर। फेडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एंड इंडस्ट्री (फोर्टी) के संवाद कार्यक्रम में त्रिपुरा के मुख्यमंत्री डॉ. माणिक साहा कहा कि त्रिपुरा 35 साल कम्युनिस्ट शासन के कारण पिछड़ गया था। जिसे अब केंद्र और राज्य में बीजेपी की डबल इंजन सरकार ने विकास की राह पर ला दिया है। पहले वामपंथी सरकार इंडस्ट्रियल डवलपमेंट और बिजनेसमैन को समाज के शत्रु के तौर पर पेश करती थीं। लेकिन कोई भी देश और प्रदेश व्यापार उन्नति के बिना आगे नहीं बढ़ सकता है। इसमें फोर्टी के संरक्षक सुरजाराम मील, आईसी अग्रवाल, अध्यक्ष सुरेश अग्रवाल, सलाहकार एन.के. गुप्ता, मुख्य सचिव नरेश सिंघल और गिरधारी खंडेलवाल, श्रवण पारीक, नीलम मित्तल के साथ उद्योग और व्यापार के विभिन्न सेक्टरों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। फोर्टी मुख्य सचिव नरेश सिंघल ने मंच संचालन किया। इसमें त्रिपुरा के मुख्यमंत्री ने राजस्थान के उद्योगपतियों को त्रिपुरा में निवेश और व्यापार के लिए आमंत्रित किया। उनका कहना है कि त्रिपुरा में व्यापार के लिए आने वाले राजस्थानियों को सरकार की ओर से पूरा सहयोग मिलेगा। सरकार ने त्रिपुरा में कई निवेश प्रोत्साहन योजनाएं बनाई हैं। सुरजाराम मील ने मुख्यमंत्री की सहजता की सराहना करते हुए फोर्टी का डेलीगेशन त्रिपुरा ले जाने की घोषणा की। आईसी अग्रवाल ने कहा कि उनकी कंपनी जीनस पहले से त्रिपुरा में व्यापार कर रही है। उनका अनुभव बेहतर रहा है। त्रिपुरा को समुद्री पोर्ट से जोड़ने के प्रयास हो रहे हैं, जो त्रिपुरा के व्यापार को नई दिशा देगा। फोर्टी अध्यक्ष अग्रवाल ने कहा कि मारवाड़ियों ने विषम परिस्थितियों में नॉर्थ ईस्ट राज्यों में अपने व्यापार के माध्यम से विकास में सहयोग किया है। अब त्रिपुरा सरकार यदि सहयोग करेगी तो राजस्थान के उद्योगपति विभिन्न सेक्टर में निवेश के लिए तैयार हैं। फोर्टी अध्यक्ष ने मणीपुर में जारी हिंसा और तनाव पर चिंता भी व्यक्त की। कार्यक्रम में सवाल-जवाब सत्र भी रखा गया। जिसमें प्रदेश के उद्यमियों ने त्रिपुरा के मुख्यमंत्री से सीधे सवाल किए। जिसका मुख्यमंत्री ने सहजता से जवाब दिया।

देव चेतना पत्रिका के मुख्य संरक्षकगण

श्री रवि लोमोड़	श्री बालाराम पोसवाल	प्रधान एम.सी. छोकर	श्री हरिनारायण बारवाल	वृद्धिचन्द गुर्जर	श्री श्योजीराम बागड़ी	श्री बाछूराम डोई	श्री पदमसिंह कसाना	श्री भँवरसिंह धाभाई	देशराज गुर्जर	श्री देवनारायण धाभाई
मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	गुर्जर समाज कल्याण परिषद, पंचकूला	जयपुर मुख्य संरक्षक	उपाध्यक्ष राज. गुर्जर महासभा	(मोखमपुरा वाले) मुख्य संरक्षक	जयपुर मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	बीबासर-झुंझुनूं मुख्य संरक्षक	पारी, चित्तौड़ मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक

गिर्राज पोसवाल	डॉ. रामकुमार सिराधना	श्री राम मणगस	श्री जीवनराम मावरी	श्री छीतरलाल कसाना	श्री मुकेश सिन्धु	श्री संदीप नरसल	जगदीश लोहिया दिल्ली	श्री रामपाल फागणा	श्री चेतन डोई	श्री श्रवणलाल चाड़
मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक

श्री शंकरसिंह बजाड़	मनीष भरगड़	श्री रामफूल डोई	श्री शैतान सिंह अवाना	श्री अखिल अवाना	श्री महेन्द्र सिराधना	श्री नीमसिंह गुर्जर	श्री देशराज चौहान	श्री दुष्यन्त सिंह तोमर	श्री रामधन चेची	श्री विनोद उमरवाल
मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक

श्री संजय सिंह गुर्जर	श्री दिनेश कसाना	श्री ओमप्रकाश जांगल	राजू अमावता	श्री मुकेश सुकल	श्री महेन्द्र सिंह चेची	श्री मंगल सिंह गुर्जर	श्री नन्दलाल गुर्जर	श्री श्रवण लाल गुर्जर	श्री नवरतन बारवाल	श्री राजेन्द्र फागणा
मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक

श्री प्रेमसिंह अवाना	श्री बीरबल प्रसाद	श्री ओमप्रकाश भड़ाना	श्री मंगलाराम खटाणा	श्री पुरुषोत्तम कसाना	श्री सीताराम कसाना	श्री राधेश्याम छावड़ी	श्री फूलचन्द बैंसला	डॉ. बी.एल. गोचर	श्री रामपाल सिंह लोमोड़	श्री राजेन्द्र सिंह दांता
मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक न.पा.चेयरमेन-मण्डावा	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक

एडवोकेट शैलेन्द्र धाभाई	श्री मोतीलाल गुर्जर	श्री शंकरलाल छावड़ी	श्री हनुमान गुर्जर गरणिया	श्री महेश धाभाई	श्री रामगोपाल गुर्जर नेकाड़ी	डॉ. कुलदीप सिंह	श्री रघुनाथ गुर्जर	श्री एच.आर. कपासिया	श्री रामधन डोई	श्री प्रमोद तँवर
मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	फरीदाबाद, मुख्य संरक्षक	जयपुर मुख्य संरक्षक	जयपुर मुख्य संरक्षक

श्री कन्हैयालाल सराधना	श्री कैलाश गुर्जर	श्री विनोद कसाणा	महन्त मंगलनाथ जी	मोहनलाल सराधना	प्रकाश चन्द पोसवाल	हरिराम डोई	श्री राजेन्द्र बसवा	श्री दुर्गाशंकर बारवाल	श्री त्रिभुवन सिंह पंवार	श्री उगमा राम गुर्जर
मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	भीलवाड़ा, मुख्य संरक्षक	सीकर, मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक

श्री नानगराम कसाना	श्री शंकर लाल गुर्जर	श्री देवेन्द्र सिंह गुर्जर	श्री रामफूल सिंह भाटी	श्री इन्द्रमल गुर्जर	श्री शंकर लाल गुर्जर	श्री गोपाल गुर्जर	श्री हरीश चन्द्र भाटी	श्री मोहनलाल गुर्जर	श्री लक्ष्मण गुर्जर	श्री ललित गुर्जर चौहान
मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	रायड़ा, मुख्य संरक्षक	मुख्य संरक्षक	भीलवाड़ा, मुख्य संरक्षक

DEV CHETNA Pub. Date : 5 October, 2023 Postal Reg. No. IR/ JaipurCity/ 426/ 2022-24
RNI No. RAJHIN/2013/50503 Posted Date : 11th October, 2023

देव चेतना (मासिक पत्रिका)

द्वारा

आगामी अंक

दीपावली विशेषांक

के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

पत्रिका के सभी सहयोगियों
प्रधान संरक्षक/मुख्य संरक्षक एवं
5 वर्षीय सहयोगी सदस्यों से
विनम्र आग्रह है कि विशेषांक में
अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देकर अथवा
दीपावली का शुभकामना सन्देश
प्रकाशित करवाकर पत्रिका को
आर्थिक सहयोग प्रदान करें जिससे पत्रिका का
नियमित प्रकाशन सुनिश्चित हो सके।

सम्पर्क करें : मोहन लाल वर्मा सम्पादक
9782655549
E-mail: devchetnanews@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक **मोहन लाल वर्मा** के लिये स्काईटैक प्रिन्टर्स, 10, बोराज ठाकुर का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.) से मुद्रित एवं म.नं. 3714, कालों का मोहल्ला, कुन्दीगर भैरूं का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक : **मोहन लाल वर्मा**
मो. 9782655549 E-mail: devchetnanews@gmail.com